जम्मू-कश्मीर की शौर्य गाथाएँ

डोडा

(डोडा के बलिदानी वीर)

- इन्द्रेश कुमार -

जम्मू-कश्मीर की शौर्य गाथाएँ

भाग एक

(डोडा के बलिदानी वीर)

लेखक

इन्द्रेश कुमार

प्रकाशक

अर्चना प्रकाशन, भोपाल

प्रकाशक
अर्चना प्रकाशन
१८, एच. आय. जी
शिवाजी नगर, भोपाल
४६२०१६, दूरभाष-५५४५२९

प्रथम संस्करण
युगाब्ध ५०९७
विक्रम सम्वत २०५२
२६ नवम्बर १९९५

लेखक
श्री इन्द्रेश कुमार
वीर भवन रघुनाथपुरा,
जम्मू-१८०००१

मूल्य
रुपये ६.०० मात्र

अक्षर संयोजक
कन्सल्टेक इन्जनियर
प्रा. लि. भोपाल

मुद्रक
बॉक्स कोरोगेटर्स एण्ड
ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल

प्रकाशकीय

जम्मू-कश्मीर में गत कई वर्षों से आतंकबादियों द्वारा हत्यायें, लूट, आगजनी का तांडव है। वह थम नहीं रहा है। वहां के मूल निवासी भारत के कई प्रान्तों में भागकर शरण ले रहे हैं। और विस्थापितों की जिन्दगी जी रहे है। कुछ वहीं डटे हुए है। आतंकवादियों का सामना कर रहे हैं, उन्हें मार भगा रहे है, तो कुछ शहीद भी हुए। यह सब जानने की आपको उत्सुकता होगी। लेखक ने कुछ रोमांचक घटनाओं का संकलन किया है। इसकी पहली किश्त **''डोडा के बलिदानी वीर''** के रूप प्रकाशित हो रही है। विश्वास है समाज में राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत करने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी ।

आपके सुझावों का स्वागत है।

प्रकाशक

प्रस्तावना

संकट के समय घबराना मनुष्य की सहज सामान्य प्रवृत्ति है। किन्तु यही समय मनुष्य की सुप्त शक्तियों व क्षमताओं के प्रगटीकरण का भी हुआ करता है। संकट के समय ही मनुष्य की खरी परख भी हो जाती है। ऊँची ऊंची डींग हाँकनेवालों के जब छक्के छूट जाते हैं तब सामान्य कहे जानेवाले व्यक्ति असामान्य साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए निकलते हैं। असामान्य का असामान्यत्व कोई विशेष बात नहीं होती पर सामान्य का असामान्यत्व सर्वसाधारण के लिए बड़ा प्रेरणास्पद होता है। किन्तु बिडम्बना यह है कि जहाँ असामान्य की सामान्य बातें भी बड़ी चर्चित होती हैं वहां सामान्य की असामान्य बातें भी लोगों के सामने तब तक नहीं आती जब तक हेतु पुरस्सर उस दिशा में प्रयत्न न किया जाय। प्रस्तुत पुस्तक ऐसे ही प्रयास का परिणाम है।

पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद की अग्नि से जम्मू-कश्मीर गत अनेक वर्षों से झुलस रहा है। कश्मीर घाटी को हिंदु विहीन बना देने के पश्चात् उस द्वेषाग्नि की लपलपाती जिह्वा अब जम्मू क्षेत्र के डोडा, पुंछ, रजौरी आदि क्षेत्रों को लील जाने के लिए आतुर हो उठी है। ऐसे समय जिन सामान्य लोगों के पराक्रम ने उसे थोपे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उनकी कुछ गाथाओं का संकलन इस पुस्तक के माध्यम से किया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हिमगिरि प्रान्त के प्रान्त प्रचारक श्री इन्द्रेशकुमार जम्मूकश्मीर में आतंकवाद प्रतिरोधी प्रयत्नों के एक प्रमुख सूत्राधार है। उनकी लेखनी से निःसृत इन सत्य घटनाओं का प्रतिवृत्त सामान्य जनता में कर्तव्य, धैर्य, सूझ-बूझ, पराक्रम व सहयोग का भाव विकसित करेगा ऐसा विश्वास है।

कुप. सी. सुदर्शन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघसचालक पूज्य *श्री राजेन्द्र सिंह* (रज्जू भैय्या) आतंकवाद के विरूद्ध मोर्चा लेने वाले १९ नागरिकों को *''नागरिक शौर्य''* पुरस्कार प्रदान करते हुए। पुरस्कार लेते हुए सूबेदार चुन्नीलाल शर्मा
१३ दिसम्बर १९९४. अभिनव, सभागृह, जम्मू

वर्तमान कश्मीर समस्या

कश्मीरघाटी में पनपा क्रूर आतंकवाद केवल गुंडागर्दी या बेरोजगारी के कारण कुछ युवकों द्वारा लड़ा जा रहा सशस्त्र गुरल्ला युद्ध नहीं है। जो लोग (मानवाधिकारवाद, बद्धिजीवी, नेता तथा पार्टियाँ) कश्मीरी आतंकवाद को इस नज़रियें से देखते है कि यह तो भुखमरी, गरीबी या विकास के अभाव में पनपे भ्रष्टाचार के पेट में से जन्मा है, वे स्वयं को तथा देश को धोखा दे रहे हैं।

कश्मीरी आतंकवाद अगर बेरोजगारी, गरीबी अथवा भ्रष्टाचार से जन्म लेता तो वह जाति या मजहब की दीवारों में नहीं बंधता। बेरोजगारी, गरीबी व भ्रष्टाचार का शिकार तो लद्दाखी, शिया, सुन्नी, गुर्जर, बकरबाल, कश्मीरी हिंदू, डोगरा, सिक्ख आदि सभी जातियों व मजहबों के लोग थे। परंतु आज के आतंकवाद ने केवल कश्मीरी पंडित, डोगरा व सिक्ख को ही घाटी तथा डोडा से बेघर-बार किया है। ये सभी हिंदू अर्थात भारतीय ही हैं। यह भी एक सत्य है कि शिया, सुन्नी, गुर्जर, बकरबाल और राजपूत मुसलमानों में से केवल नाम मात्र लोग ही बेघरबार हुए हैं।

विस्थापित	संख्या
कश्मीरी पंडित	२,५०,००० (ढाई लाख)
सिक्ख	३५,००० (पैंतीस हजार)
डोगरा व अन्य	४२,००० (बियालीस हजार)
मुस्लिम	३,००० (तीन हजार)
योग	३,३०,००० (अर्थात साढ़े तीन लाख लगभग)

आज कश्मीर घाटी तथा डोडा जिला में केवल यही नारे क्यों लगते हैं?

यहां क्या चलेगा - निजाम मुस्तफा

हिन्दुस्थानी कुत्तों - वापस जाओं, वापस जाओं

कश्मीर क्या बनेगा - पाकिस्तान, पाकिस्तान

पाकिस्तान व अन्य अनेक इस्लामी मुल्क जम्मू- कश्मीर में एक ही मजहब के लोगों को भडका रहे हैं। सच तो यह है कि कश्मीरी आतंकवाद एक मजहबी तथा उन्मादी आतंकवाद है। जिसको आलगाववादी मुल्ला, मौलवी, जमात व लीग के नेताओं ने जन्म दिया है। इसकी जड़ में भारत व भारतीय (अर्थात हिन्दू व हिन्दुस्थान) के प्रति घोर नफरत भरी हुई है। इस अलगाववादरूपी बीज को पैसा, प्रशिक्षण व हथियार केरूप में पाकिस्तान व अन्य मजहबी देशों के द्वारा खाद, पानी व हवा दिया जा रहा है। जिससे कश्मीरी मुस्लिम युवा व युवती में क्रूरता व हिंसा पैदा हो गई है। विश्व के अनेक बड़े देश (जैसे-अमरीका) चाहते हैं भारत को भी टुकड़े-टुकड़े किया जा सके। एशिया विशेष रूप से भारत को अपने कब्जे में रखने के लिए अमरीका स्वतंत्र (अलग) कश्मीर के रूप में एक भूखंड हथियाने का षड्यंत्र रच चुका है। सन् १९५३ से पूर्व की स्थिति का समर्थन करने वाले अनेक एजेंट भी अमरीका ने भारत में खड़े कर लिए हैं। ये देश प्रत्यक्षरूप से आतंकवादियों व अलगाववादियो की सहायता व समर्थन कर रहे हैं.

आतंकवादियों से प्राप्त आंशिक हथियार व विस्फोटक सामग्री
१९९० से १९९३ तक

ए. के. टाईप राईफल्स	८,८४५	यू एमजी	४९३
रिवाल्वर /पिस्टल	२,८५३	आरपीजी	२८२
रॉकेट लान्चर्स	२३८	रॉकेट्स	९४७
मेग्झीन्स	२२,३१८	रॉउन्ड्स	९,८८,०००
ग्रेनेड्स	४५,६७१	डिटोनेटर्स	१६,९७८
विस्फोटक	८४४ किलो.		

इन शस्त्रों से लेस आंतकवादियों से नि:शस्त्र शान्तिप्रिय व्यक्ति किस प्रकार

सामना कर सकता है और क्या वह राजनैतिक प्रकिया में भाग ले सकेंगे ।

आज कश्मीरी आतंकवाद को समझने की आवश्यकता है। केवल गरीबी या बेरोजगारी के कारण मजहबी उन्माद नहीं पनपता और न ही युवक अथवा युवती बम गोला फेंककर, गोली या ग्रेनेड, चलाकर निहत्थे, निर्दोष व देशभक्तों की हत्या नहीं करते। आतंकवादी मानवता खोकर बहशी दरिंदे बन गए हैं। महिलाओं को नंगा कर वासना मिटाने हेतु उनकी इज्जत लूटते हैं। स्तन काटकर उनको तड़पा-तड़पा कर मारते हैं। एक अफगानी शेख जमालुद्दीन दरिंदे ने प्रेस के सामने स्वीकार किया कि उसने २७ महिलाओं की इज्जत लूटी है जिसकों वो कहता है कि उसने इस्लाम मजहब के अनुसार यह काम किया है । युवकों की आंखें तथा कलेजा निकालना, अंग-अंग काटकर वृक्षों पर लटकाना, शरीर से बम बांधकर चिथड़े-चिथड़े कर उडा देना। परंतु दुनिया भर के मुसलमान नेता चुप हैं। मानवधिकारवादी भी चुप हैं। सैकड़ो मुस्लिम युवतियां तथा उनके परिवार भी इन दरिंदों से बचने के लिए पलायन कर चुके हैं। आज यह आतंकवाद हिंदुस्थान की सेना का मुकाबला कर रहा हैं । आधुनिक शस्त्रों से हमला कर रहा है। सैकड़ों जवान तथा अफसर जान से हाथ धो बेठे हैं। अरबों की संपत्ति जलाई जा चुकी है। सच तो यह है कि यह पाकिस्तान द्वारा हिंदुस्थान पर हमला है तथा पाक द्वारा छेड़ा गया युद्ध है।

मारे गए लोग, आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले व जलाई गई संपत्ति
१९८९ से फरवरी १९९४ तक

मारे गये पाक प्रशिक्षित	३,७२२	(भारतीय मूल के)
आतंकवादी	७२	(विदेशी नागरिक)
मारे गये असैनिक	२,४३०	
गोलीबारी की वारदाते	४,९३२	
गोलीबारी में मारे गये	१,९००	
सुरक्षा कर्मियों पर आक्रमण	६,५७०	

मारेगये सुरक्षाकर्मी	७७७
जख्मी	२,६४३

(ये शासकीय आंकड़े हैं, वास्तविक संख्या और अधिक ही होगी)

इसके अतिरिक्त ३७६ रॉकिटे आक्रमण हुए, २५०२आगजनी ३८२९बम विस्फोट,१०४७ अपहरण, तथा १४२०० निजी मकान, १५०० दुकान १३५७ शासकीय भवन, १५४ पुल और ३१७ शाला भवन जलाये गये रु. २५० करोड़ मूल्य के रेल्वे के १० लाख से अधिक लकड़ी की स्लीपर्स लूटी गयी।

ऊपर दिए आंकड़ो व तर्कों में से कुछ प्रश्न उठते हैं:

ज्वलंत प्रश्न

१. इतने हथियार व विस्फोटक सामग्री कश्मीर में आती रही परंतु प्रदेश व भारत की कांग्रेस सरकार क्या कर रही थी? उसने इस अवैध सामग्री को आने से क्यों नहीं रोका।

२. अभी और कितने हथियार तथा विस्फोटक सामग्री उग्रवादियों के पास होगी जो अभी भी अपनी जंग जारी रखे हैं?

३. पाकिस्तान प्रशिक्षण व हथियार देता रहा परंतु दिल्ली में बैठी कांग्रेस सरकार तथा जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस, समाजवादी व साम्यवादी नेता इन सब चीजों पर पर्दा डालते रहे?

४. भारतीय सेना की बहुत बड़ी शक्ति झोंककर इतनी बड़ी हानि उठाने के बाबजूद नरसिंह राव सरकार पाकिस्तान को सबक सिखाने से क्यों घबरा रहीं हैं ?

५. हजारों सैनिकों तथा निहत्थे, निर्दोष देशभक्त नागरिकों की हत्याओं पर मानवाधिकार व बद्धिजीवी संगठन चुप क्यों? क्या पिछले ४७ वर्षों में देश के बुद्धिजीवियों को वर्तमान सैक्युलरिज्म ने कुंठित कर दिया है कि वे न तो सच देख सकते हैं और न ही सच बोल सकते हैं?

६. कश्मीरी आतंकवादियों को यह दो टूक उत्तर क्यों नहीं कि तुमसे वार्ता करेंगे

परंतु तभी जब तुम गोली चलाना छोड़ दोगे और भारत माता की जय बोलते हुए भारतीय संविधान में आस्था व्यक्त करोगे, अन्यथा ऐसे सभी लोग हिंदुस्थान छोड़कर चले जाएंगे।

७. एक-एक आतंकवादी जिसके हाथ निहत्थे, निर्दोष भारतीयों के खून से रंगे हैं उनमें से किसी को भी अभी तक दंड या फांसी क्यों नहीं? उनको जेलों में पाल-पोस कर और खूंखार क्यों बनने दिया जा रहा है?

८. क्या भारतीय खून इतना सस्ता है कि सैक्यूलर नेता व पार्टियों को उसकी कोई कीमत नजर नहीं आती?

कश्मीरी विस्थापित - जम्मू के एक शिविर में

९. विस्थापितों का सा जीवन जी रहे लोग कब तक बेघर बने दर्दनाक जिंदगी जीते रहेंगे ? उनको कश्मीर अर्थात घरों में सुरक्षित व सम्मानित ले जाने की प्रभावी योजना अभी तक भारत सरकार क्यों नहीं बना पाई ?

१०. राजनैतिक प्रक्रिया की चर्चा करना परंतु हालात सुधारने में रूचि कम लेना आखिर क्यों? जब-जब राजनैतिक प्रक्रिया की चर्चा होती है आतंकवादी और अधिक हत्यायें करते तथा संपत्ति को नष्ट करते हैं?

११. तात्कालिक राजनैतिक लाभ के लिए केन्द्र कांग्रेसी सरकार ने हजरत बल कांड में भारतीय सेना को शर्मनाक समझौते के लिए मजबूर किया, आखिर क्यों?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

ऐसे भयावह माहौल में मजहब, जाति व राजनीति से ऊपर उठकर देश की तथा मानवता की रक्षा व सेवा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों की भूमिका का उल्लेख करना अत्यंत आवश्यक है?

(क) स्वयंसेवक बेसहारों का सहारा बना

अपने ही घर में बेघर हुए हिंदु को दर-दर भटकने नहीं देंगे चाहे वह आतंकवाद से पीड़त विस्थापित परिवार हो अथवा घर के चिराग अथवा सहारे को खोकर अपने ही घर में सहमी-सहमी, खोई-खोई जिंदगी व्यतीत करने वाला परिवार हो, सभी को सहारा देने का निर्णय कर संघ द्वारा **जम्मू-कश्मीर सहायता समिति** का गठन किया गया।

(१) अभी तक सामग्री या नकदी के रूप में २.५० करोड़ रुपये की सहायता जम्मू केन्द्र पर वितरित की गई है। सहायता प्राप्त परिवारों में हरिजन, पिछड़ा, ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य सभी वर्गों, जाति तथा मजहब के लोग हैं। देश के प्रत्येक प्रांत में भी इसी प्रकार से स्थानीय स्तर पर मदद दी जा रही ।

(२) प्रत्येक शहीद के परिवार में, ५,000/- रु. से२५,000/- रु. तक की सहायता उसके नजदीक संबंधी को दी जाती है। ६००परिवारों को यह सहायता दी गई है ।

(३) अभी तक विस्थापित परिवारों की१०० कन्याओं के विवाहों में मदद दी गई है।

(४) ११०० से अधिक युवक व युवतियों को उच्च शिक्षा हेतु मदद दी गई है।

(५) सैकड़ों महिला, पुरूष व बच्चों को गंभीर तथा लंबी बीमारी से उपचार हेतु मदद दी जा रही है ।

(६) अनेक परिवारों को छोटा-मोटा व्यवसाय शुरु करने में सहयोग कर उनके जीवन को आर्थिक स्वावलंबन प्रदान किया है।

(७) आतंकवाद से जख्मी लोगों को १000/- रु. से १0,000/- रु. की मदद की जा रही है और अभी तक ३00 के लगभग लोगों को यह मदद दी गई है।

(८) आतंकवाद से पीड़ित परिवार (पुलिस, सेना अथवा नागरिक) के बच्चों की शिक्षा, निवास, भोजनादि हेतु शहीद परिवार सेवा योजना प्रारंभ की है जिसके अंतर्गत १० से अधिक बच्चों पर ४००/- रु. प्रति बालक व्यय किया जा रहा है। भविष्य सुरक्षा की यह अति सुंदर तथा अभिनव योजना है.

(९) १६00 से अधिक युवक युवतियों को नौकरीयाँ दिलवाई गई है।

(१०) अनेक मुस्लिम विस्थापित परिवारों को भी मदद दी जा रही है तथा अनेक मुस्लिम कन्याओं को भी सहारा देकर उनको पुनर्जीवन दिया जा रहा है।

(ख) स्वयंसेवकों ने आतंकवादियों व पाक के झूठे प्रचार का पर्दाफाश किया

१. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दुनिया में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों व छद्म सैक्युलर नेताओं द्वारा भारतीय सेना को बदनाम किया जा रहा था। अगर भारतीय सेना की पकड़ कमजोर हो जाए तो भारत विभाजन करवाकर जम्मू-कश्मीर (अर्थात् विशेष रूप से कश्मीर) को हिंदुस्थान से काटा जा सकता है। इसलिए जबाबी सैनिक कार्यवाही को बढ़ा-चढ़ाकर दुनिया में पेश किया जा रहा था। देश की कांग्रेस सरकार व झूठे धर्मनिरपेक्ष दल इनका मुंहतोड़ जबाव नहीं दे पा रहे थे। झूठ का पर्दाफाश कर दुनिया को सच्चाई बताने के लिए **जम्मू-कश्मीर नेशनल फ्रंट -इन्टरनेशलन (जे. के. एन. एफ.)** बनाया गया। इसके तत्वावधान में सर्वप्रथम लंदन में और फिर अनेक देशों में सम्मेलन किए गए। इसका परिणाम निकला कि '' मानवाधिकार सम्मेलन, जिनेवा" में भाजपा नेता श्री अटल जी के नेतृत्व में पाकिस्थान को मुंह की खानी पड़ी।

२. देशभर में जनता को ठीक से कश्मीर की सच्चाई बताने हेतु समय-समय पर युवक-युवतियों की टोलियों ने भ्रमण कर समाज जागृत किया। '' कश्मीर चलो'' आंदोलन हुए। इस कार्य में विद्यार्थी परिषद्, राष्ट्र सेविका समिति, भाजपा, हिंदू रक्षा समिति तथा प्रत्यक्ष संघ ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है।

केन्द्र सरकार दुनिया के दबाव में कमजोर पड़कर झुकती दिखाई दी परंतु अपने प्रयत्नों से अंततोगत्वा संसद में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि पाक से वार्ता पाक अधिकृत कश्मीर पर हो । विवादित क्षेत्र यही है। फरवरी मार्च९४ में कश्मीर पंडित सभा के नेतृत्व में १६ कश्मीरी पंडित (हिंदू) युवकों ने भारत सरकार को जगाने हेतु ६०० कि. मी. लंबी २२ दिन की पदयात्रा नगरोटा (जम्मू) से दिल्ली (संसद भवन) तक संपन्न की।

३. जम्मू में लेखकों व विचारकों के एक मंच का गठन जिसका नाम **'जम्मू-कश्मीर विचार मंच'** रखा गया। इसके द्वारा एक अंग्रेजी पत्रिका 'VOICE OF JAMMU KASHMIR' निकाली जा रही है। अभी-अभी डोडा के एक आतंकवादी वकील श्री किचलू ने नवंबर ९३ में एक मानहानि का दावा इस पत्रिका पर ठोक दिया है। यह पत्रिका देश-विदेश में अनेक (हजारों) प्रमुख लोगों तथा राजनीतिज्ञों तक जाती है।

४. समय-समय पर पुस्तकें प्रकाशित करना पत्रिकाओं द्वारा कश्मीर विशेषांक निकालना, जिससे लोगों को सच्चाई पता चलती रहे। इसमें पाञ्चजन्य व आर्गेनाईजर की भूमिका सराहनीय है जो निर्भीकता से सत्य छाप रहे हैं। इस कारण पाञ्चजन्य को अनेक धमकी भरे पत्र तथा फोन भी आए है।

५. कश्मीर घाटी में विकास के नाम पर व्यय होने वाले धन का अधिकांश भाग आतंकवादियों के पास पहुंचता है जिसके कारण आतंकवादियों की कमर नहीं टूट पाती। इसको प्रमाण सहित प्रकाशित किया तथा सरकार के ध्यान में लाया जा रहा है।

६. सर्वश्री जगमोहन (पूर्व राज्यपाल, जम्मू कश्मीर), अरूण शोरी आदि प्रतिभावान दिग्गजों के द्वारा देश, विदेश में कश्मीर समस्या तथा धारा ३७० के दुष्परिणाम के बारे में प्रभावी जागरण करवाया गया है।

७. विस्थापितों में भारतीय शिक्षा (विद्या भारती) ने ८ विद्यालय प्रारम्भ कर बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

(ग) संघ स्वयंसेवक शहादत के मार्ग पर अग्रसर

१. आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्र के युवक-युवतियों को आत्मरक्षा हेतु तरह-तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे आतंकवादियों का डटकर मुकाबला करें। अनेक ऐसे कैम्पों का आयोजन किया जा चुका है। अभी तक १९ घटनाएं ऐसी हो चुकी हैं जब स्थानीय लोगों ने आतंकवादियों का मुकाबला कर या तो उनको पकड़ लिया, मार गिराया अथवा भगा दिया। अभी १८ अप्रैल १९९४ को संघ के सरकार्यवाह मा. शेषाद्रि जी द्वारा ऐसे छः साहसी युवकों को सम्मानित कर आम जनता का मार्गदर्शन कर उनका मनोबल ऊंचा उठाने का काम किया है।

२. समय-समय पर जान जोखिम में डालकर संघ युवकों द्वारा खूंखार आतंकवादियों के ठिकानों पर छापे डलवाकर पकड़वाया। १९८८-८९ में बारामूला में, १९९२-९३ में कश्मीर तथा डोडा जिले में ऐसी अनेक घटनाऐं हो चुकी है। १९८८-८९ में पकड़वाए देश-गद्दारों को बाद में फारूख प्रशासन ने छोड दिया था उसी फारूख को कांग्रेस पुनः नेता बनाकर जम्मू-कश्मीर को फिर से आग में धकेल रही है।

३. सरकारी मशीनरी में भारी संख्या में आतंकवादी अथवा उनके समर्थक अफसरों के खिलाफ आवाज उठायी, धरने दिये, जुलूस निकाले और जनता का दबाव बनाया। कुछ समय पूर्व राज्य के एक मुख्य सचिव शेख गुलाम रसूल जो कि बड़े पाकपरस्त व गद्दार हैं को बदलवाने में सफलता प्राप्त की।

४. पूर्व सैनिकों को जागृत व संगठित करना, राज्य में हजारों की संख्या में ये बंधु हैं, ये देशभक्त, उच्च प्रशिक्षित तथा साहसी है। गांव-गांव में फैले इन बंधुओं की अगर सरकारी तंत्र में सहायता ली जावे तो आतंकवादियों को सिर उठाने व छुपाने की जगह भी नहीं मिल सकेगी। यह अति कारगर मार्ग है आतंकवाद को जम्मू क्षेत्र से समाप्त करने का। इसके लिए 'पूर्व सैनिक सेवा परिषद' का गठन किया गया है।

५. कश्मीर विस्थापितों में "घर (कश्मीर) चलो" आंदोलन को प्रारंभ किया गया है। इसके अंतर्गत कश्मीर पर अपने अधिकार को पुनः प्राप्त करना है।

विस्थापन स्थाई न होकर अस्थाई रहे तथा एक कारगर हथियार बनकर आतंकवाद को कुचलने में भूमिका निभाए।

६. जो हिंदु युवक आतंकवादियों का विरोध करते हुए प्रदेश सरकार अथवा प्रशासन के भेदभावपूर्ण रवैये के कारण पकड़कर जेल में पी. एस. ए. अथवा टाडा में बंद कर दिए जाते हैं उनके परिवारों को मदद दी जाती है तथा उनके मुकदमें लड़े जाते हैं। इस समय ऐसे तीन मुकदमें लड़े जा रहे हैं तथा जेल में बंद युवकों के परिवारों को आर्थिक मदद भी दी जा रही है।

७. जम्मू-कश्मीर को आतंकवाद से बचाने के लिए तथा देश का विभाजन रोकने के लिए संघ स्वयंसेवकों की लंबी बलिदान श्रृंखला में **स्व. टीका लाल टपलू, प्रेमनाथ भट्ट, संतोष ठाकुर, सतीश भंडारी, स्वामी राज काटल, रुचिर कुमार मोहन सिंह, विभीषण सिंह** आदि अनेक नाम उल्लेखनीय हैं। स्वयंसेवक का नारा है " गोलियां कम पड़ सकती हैं सीने नहीं"। शहादतें देश की अखंडता की गारंटी है।

८. **विशेष :** समय-समय पर संघ, भाजपा आदि के प्रमुख अधिकारियों व नेताओं द्वारा प्रदेश के व्यापक प्रवास ने जनता के मनोबल को बढ़ाने में बहुत बड़े सहारे का काम किया है। डोडा जिले के विशेष रूप से रामवन, भद्रवाह, किश्त वाड, भलैस तथा पाडर से पलायन करके आए हजारों बंधुओं को पुन: अपने-अपने इलाके व घरों तक पहुंचाने में कामयाबी मिली है। इसके लिए रामबन भद्रवाह व किश्तवाड में स्थानीय स्तर पर कामयाबी मिली है। इसके लिए रामबन भद्रवाह व किस्तवाड में स्थनीय स्तर पर ५ दिन से ३० दिन तक के सहायता शिविर भी लगाए गए। जिसके कारण आतंकवादी आंदोलन को गहरा धक्का लगा है।

समस्या के समाधान हेतु उठाए जानें वाले कदम

१. **कश्मीर में राजनैतिक प्रक्रिया को शीघ्र लागू करने के लिए आतंकवाद व आतंकवादी को जड़ से उखाड़ फैंकना जरूरी है।**

(क) इसके लिए सेना को कश्मीर में स्थानीय प्रशासन मर्यादित समय के लिए सौंप कर आतंकवाद को कुचलने की खुली छूट देना।

(ख) डोडा जिले को अशांत क्षेत्र घोषित कर सेना को सुपुर्द करना। छावनी की शीघ्र स्थापना हो।

(ग) पूर्व सैनिकों की शक्ति का आतंकवादियों को कुचलनें हेतु प्रभावी योजना बनाकर उपयोग करना।

(घ) प्रदेश प्रशासन में से आतंकवादी अथवा आतंकवाद समर्थक अफसर व कर्मचारी को निकाल बाहर करना तथा उचित सजाएं देना। केन्द्र सरकार के अनुसार ऐसे ५५०० के लगभग कर्मचारी व अफसर हैं जिन पर शक पक्का है।

(ङ) विकास के नाम पर व्यय किए जाने वाले धन को आतंकवादियों के पास ज़ाने से रोकने हेतु सरकार द्वारा ईमानदारी से प्रभावी कदम उठाए जाना।

(च) भिन्न-भिन्न मार्गों व साधनों से आतंकवादी आंदोलन को भ्रष्ट करना ताकि वे खूंखार, डकैत, लुटेरे व नैतिक हीनता का जीवन अपना ले।

(छ) घाटी के परंपरागत नेताओं (क्योंकि वर्तमान हालात के लिए ये दोषी है) के स्थान पर नया नेतृत्व जो अनेक राजनैतिक दलों (ग्रुपों) मं बंटा हो।

(ज) पाकिस्तान से लगी सीमा को पूरी तरह सीलबंद करना।

२. **अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रचार तंत्र खड़ा करना।**

(क) पाक परस्त अंतर्राष्ट्रीय प्रचार का प्रभावी उत्तर देने हेतु एक राष्ट्रीय नीति व योजना बनाना।

(ख) दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश को गुमराह करने के बजाय देश को सही स्थिति की जानकारी देने हेतु प्रचार माध्यमों (टी. वी., रेडियो, समाचार पत्र आदि) का उचित उपयोग कर जनता को आतंकवाद से लड़ने हेतु तैयार करना।

(ग) कश्मीरी पंडितों व डोडा विस्थापितों को एक हथियार के रूप में प्रयोग करना ताकि तथाकथित मानवतावादियों को मुंह तोड़ जबाव दिया जाए।

३. पाकिस्तान से केवल पाक अधिकृत कश्मीर पर ही वार्ता होगी यह बात पाक सहित दुनिया के देशों को हमें स्पष्ट कर देनी चाहिए। अगर पाकिस्तान अपनी हरकतों (षड्यंत्रों) को नहीं रोकता तो भारत को उसके द्वारा छेड़ी गई प्रॉकसी वार का उत्तर युद्ध की भाषा व शैली में ही देना चाहिए।

४. केन्द्र सरकार को कश्मीर घाटी में जनसंख्या का संतुलन बनाने की प्रभावी योजना सामाजिक व सांस्कृतिक संगठनों का सहयोग लेकर बनानी चाहिए। २५ प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या होने से समस्या का स्थायी हल हो सकेगा । इस कार्य से संविधान की धारा ३७० अगर रास्ते का रोड़ा बनती है तो इस धारा को समाप्त करना चाहिए ।

५. **विस्थापित हिंदुओं को घाटी अर्थात अपने -अपने घरों मे सम्मानित व सुरक्षित रूप में ले जाने की प्रभावी योजना बनानी चाहिए।**

(क) कश्मीरी हिंदू (पंडित, डोगरा, सिक्ख आदि) को घाटी में राजनैतिक अधिकार मिलना चाहिए। इसके लिए कम से कम एक लोकसभा तथा सात विधान सभा क्षेत्र घाटी में सुरक्षित करने चाहिए।

(ख) आर्थिक स्वावलंबन की संवैधानिक व्यवस्था करना । नौकरियों में आरक्षण में योग्यता को ही आधार माना जाए।

(ग) उच्च शिक्षा में प्रवेश को मैरिट पर करना या फिर स्थान आरक्षित करना।

(घ) जो मकान, दुकान छतिग्रस्त हो गए हैं उनके निर्माण के लिए लोगों को सहायता मिलनी चाहिए।

६. **जम्मू, कश्मीर तथा लद्दाख तीनों क्षेत्रों के लिए अलग-अलग स्वायत्त विकास प्राधिकरण (Regional Council) बनाए जाने चाहिए। इससे तीनों क्षेत्रों का संतुलित विकास, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में हो सकेगा। इन विकास प्राधिकरणों में जनता का प्रतिनिधित्व हो तथा संवैधानिक रूप से वे निर्णय ले सकने को स्वतंत्र भी हो।**

ॐ

डोडा के बलिदानी वीर

आतंकवादियों को १९८९ से १९९१ तक कश्मीर में मिली अभूतपूर्व सफलता तथा ६ दिसम्बर, १९९२ को अयोध्या में गिरे विवादित ढ़ाचें पर भारत के प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंहराव द्वारा की गई इस टिप्पणी के कारण कि, यह दिन भारत के लिए शर्मनाक है, आतंकवादियों के हौंसले बुलंद हो गये और उन्होंने जम्मू क्षेत्र के डोडा जिले को अपना निशाना बनाया तथा नारे लगाये ''कश्मीर जीत लिया है'' अब डोडा खाली करवायेंगे ''आतंकवादियों का यही नारा, लेकर रहेंगे जम्मू सारा''।

परन्तु ६ दिसम्बर, १९९२ की घटना ने हिन्दू जनमानस की चेतना को भी झंझोड़ा था और घर - घर में संघ कार्य के कारण यह रोशनी फैल रही थी कि ''अब सोने का वक्त नहीं है, बल्कि हे हिन्दू वीरों ! उठो और इतिहास रच दो अपने सम्मान, धरती तथा अपने धर्म की रक्षा के लिए आक्रमक बनों, बलिदानों का अम्बार लगा दो''।

संघ अधिकारियों ने कमर कस ली । हिन्दू नेताओं के डोडा जिले में दौरे दो गुने/तीन गुने हो गये । भा.जा.पा. ने तो डोडा बचाओं सत्याग्रह करके डोडावासियों में जान फूंक दी । भा.जा.पा. ने केन्द्र सरकार को विवश करने में सफलता प्राप्त की जिसके कारण बहुत बड़ी मात्रा में फौज डोडा जिले में भेजी गई ।

डोड़ा जिले में जनता ने संघ स्वयंसेवकों के नेतृत्व में एक नया तथा तेजस्वी इतिहास रच डाला जिसकी कुछ झलकियां अनेक घटनाओं के रूप में नीचे वर्णित की गई हैं -

१. कानून के रक्षक ही भक्षक बन गये -

संतोष ठाकुर

डोडा जिले में आतंकवाद में संलिप्त लोगों की सहायता देने वालों में सरकारी अफसर तथा पढ़े-लिखे जन नेताओं की कोई कमी नहीं है । जब बाढ़ ही खेत को खाने लगे तो खेत को कौन बचायेगा?

डोडा शहर का प्रतिष्ठित युवा अधिवक्ता संतोष ठाकुर शेर दिल आदमी था। गरीबों की सहायता करने वाला, भगवान पर अटूट श्रद्धा रखने वाला, डोडा शहर में हिन्दुओं के दु:ख को बांटने वाला यह हिंदू वीर मज़हबी कट्टरवादियों की आंखों की किरकिरी बना हुआ था । डोडा शहर में हिन्दू जनसंख्या १० प्रतिशत मात्र है। इस मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हिन्दू अनेक वर्षों से सहमी -सहमी जिदंगी जी रहे है।

१९ दिसम्बर, १९९२ संतोष ठाकुर बाजार से सब्जी लेकर जा रहा था। रास्ते में दिन-दहाड़े डिप्टी कमिश्नर (सर्वोच्च जिलाधिकारी) महोदय के कार्यलय के पास आतंकवादियों ने इसे गोलियों से भून ड़ाला ११ दिसम्बर, १९९२ को संतोष ठाकुर ने डिप्टी कमिश्नर श्री मो. अब्दुल जिलानी को पत्र लिखा था कि यदि मेरा अपहरण या हत्या की जाती है तो इसके लिए निम्न व्यक्तियों को दोषी करार दिया जायें- व्यक्ति हैं सर्व श्री अधिवक्ता मोहम्मद अकबर किचलू, मोहम्मह हनीफ जमात -ए-इस्लामी नेता सैदुल्ला तांतरे एवं अधिवक्ता चुनी लाल ठाकुर । आज भी संतोष ठाकुर की माँ रो-रो कर कहती है, कि डी.सी. साब ने मेरे बेटे को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया, न ही कोई जांच की करवाई की गई , न ही किसी के खिलाफ कोई कार्यवाही की गई।

संतोष ठाकुर की बहन कहती है, कि भैया तो भा. ज. पा. के नेता थे। संघ के स्वयंसेवक भी थे । वे कभी मुसलमानों के खिलाफ नहीं रहे । वे हिन्दुओं के दु:ख में उनकी तकलीफों को बांटते थे, परन्तु पता नहीं सरकारी व गैर सरकारी कट्टरपंथियों

ने मेरे भैया को क्यों मरवा दिया ? संतोष ठाकुर की हत्या पर डोडा शहर का हिन्दू आज भी अपने आपको अनाथ मानता है ।

२. आतंकवाद के विरूद्ध समाज का मोर्चा -

सतीश भंडारी

जिला डोडा के किश्तवाड. में नगर के मुख्य बाजार में दिनांक १० मई, १९९३, सांय ७.४० पर आतंकवादियों ने "श्री सतीश भंडारी" को गोली मारकर शहीद कर दिया । संघ के स्वयंसेवक श्री संतीश भंडारी हिन्दू रक्षा समिति जम्मू कश्मीर प्रदेश के प्रदेश मंत्री थे । किश्तवाड़ क्षेत्र में वे जन-जन को प्रिय थे । संघ अधिकारियों को ही नहीं सर्व साधारण जनता को उसपर गर्व था क्योंकि किसी भी संकट में वह सदैव समाज सेवार्थ तथा रक्षार्थ अगली पंक्ति में आगे खड़ा काम करता दिखाई देता था ।

मृत्यु से पांच दिन पूर्व प्रमुख कार्यकर्ता व नागरिक बैठक में सतीश भंड़ारी के मुख से ये शब्द निकले थे कि अगर हम आतंकवाद को मुंह तोड़ जवाब देना चाहते हैं तो उसके लिए समाज में भी प्रतिक्रिया देने वाला मनोबल बनाना होगा । सरकार भी. तभी आतंकवाद को कुचलने के लिए सक्रिय होगी, जब किसी विशेष नेता का बलिदान होगा ।

ये शब्द सुनते ही बैठक में उपस्थित सभी बंधुओं की आंखे इस वीर को ताकने लगीं और इसने भी स्वयं को प्रस्तुत करते हुए कहा, "मैं तैयार हूं" । कौन जानता था कि "प्रभु" इस बलिदानी के बलिदान का समय इतना शीघ्र रच डालेंगे ।

अपने नेता की हत्या के कारण वहां का देशभक्त समाज उत्तेजित हो उठा और संगठित होकर आतंकवाद के विरूद्ध उठ खड़ा हुआ । श्री सतीश भंडारी का बड़ा सुपुत्र १८ वर्षीय बंदूक में गोलियां भरकर पिता के हत्यारों की खोज में बाजार में निकल

पड़ा। पर तब तक कर्फ्यू घोषित हो गया था। सेना के जवानों ने मोर्चा सम्भाल लिया था। ११ मई, १९९३, प्रातः १० बजे, जब स्व. सतीश भंडारी की शव यात्रा अंतिम दाह संस्कार के लिये जा रही थी, तो आतंकवादियों ने मुस्लिम बस्ती से शवयात्रा पर फायरिंग कर कायरता पूर्ण अमानवीय रूप प्रकट किया । इस घटना से शव यात्रा में सम्मिलित हजारों नौजवान क्रोधित हो उठे। चिता को अग्नि देने के पश्चात् तुलसी नगर परेड ग्राउंड किश्तवाड़ के साथ बनी "इकबाल अकेडमी" को अग्नि को भेंट कर दिया गया जिसमें कई घंटों तक सैकड़ों बम विस्फोट होते रहे। "असगर पीर" डायरेक्टर लाइब्रेरीज की यह एकाडमी कहने को मात्र विद्यालय थी, परन्तु यहां आतंकवादियों के हथियारों का भंण्डार था। यह देखकर दोपहर डेढ़ बजे "अब्दुल क्यूम डार" नामक एक आतंकवादी ने हिन्दुओं पर फायर खोल दिया। लेकिन बहादुर नौजवानों ने गोलियों की परवाह किये बिना उसकी बंदूक छीन ली और इसी छीना-झपटी में एरिया कमांडर अब्दुल क्युम डार की जलने से मौत हो गयी।

स्व. सतीश भंडारी मरकर भी अमर हो गये। उनके बलिदान के पश्चात तो घर-घर में से भय भाग खड़ा हुआ। प्रत्येक मां रोते हुए अपने युवा बेटे से कह रही थी कि बेटा भारत मां की रक्षा ही तो मेरे दूध की लाज है। परन्तु छद्म धर्म निरपेक्ष सरकार ने तो आतंकवादियों को पकड़ने की जगह हिन्दु लोगों के घरों पर छापे मारकर निर्दोष लोगों की पिटाई की और २२ युवकों पर एकाडमी जलाने व आतंकवादी को मारने का केस बना डाला।

रा. स्व. संघ ने किश्तवाड़ में इस वीर की स्मृति में शहीद सतीश भंडारी के नाम पर निःशुल्क चिकित्सा केन्द्र एवं साहित्य केन्द्र ये दो प्रकल्प प्रारंभ किये। यह पहला अवसर था, जब मैं रोया था क्योंकि अगस्त १९८३ में जब मैं पहली बार किश्तवाड़ गया था तो बस अडडे पर लेने आये अनेक बंधुओं में सर्वप्रथम इसी अपरिचित युवक ने बस से उतरते समय मुझे नमस्कार किया था। उसके सुंदर गोरे रंग, चेहरे पर रोबी दाढ़ी, हसमुख स्वभाव व शारीरिक चपलता ने मुझे प्रभावित किया था। इस व्यक्तित्व के विकास में मेरी व्यक्तिगत भूमिका तथा सतीश से मेरा लगाव सभी जानते हैं।

३. आतंकवादियों को सशस्त्र पकड़ सेना को सौंपा --

११ फरवरी, १९९४ को रात्रि के समय ५ आतंकवादी किश्तवाड़ तहसील के छात्र क्षेत्र के गुरीनाला गांव में एक हिन्दु के धर में घुस कर घरवालों को धमका कर रूपया पैसा तथा जेवरात मांगने लगे। घरवालों के इंकार करने पर आतंकवादियों ने उन्हें मारने के लिए हथियार निकाल लिये, परन्तु यह देखकर उसी घर के मदन भगत और राकेश भगत ने खाली हाथ उन आतंकवादियों पर धावा बोल दिया। झूमाझपटी में इन दोनों भाइयों ने आतंकवादियों के हथियार छीन लिये इस प्रकार आतंकवादी भयभीत होकर भागनेलगे, परन्तु दोनों भाइयों ने उनका पीछा कर एक आतंकवादी को दबोच लिया और रस्सियों से बांधकर उसको हथियारों सहित ६ कि.मी. दूर सीमा सुरक्षा बल के जवानों को सौंप दिया।

इस संघर्ष में भागते हुये आतंकवादियों को इन दोनों भाईयों मदन भगत और राकेश भगत ने चेतावनी दी थी कि अब इस गांव में कभी आने की हिम्मत मत करना। तब से आतंकवादी उस गांव में नहीं आये, और वहां के लोग अपने गांव में धरती व धर्म की रक्षा बहादुरी से करते हुये जी रहे हैं।

४. संगठन शक्ति का चमत्कार -

किश्ववाड़ के दूर दुर्गम दच्छन क्षेत्र के, जहां दिन भर में दो बसें ही आती जाती हैं, काशीराम नामक एक पुलिस के सिपाही का १९९४ में गाँव मडवा से आतंकवादियों ने अपहरण कर लिया। दच्छन से मडवा तक पैदल मार्ग बना है। दच्छन क्षेत्र मुस्लिम बहुल है, परन्तु जब दच्छन क्षेत्र की हिन्दू जनता को इस घटना की जानकारी मिली तो उन्होंने मडवा पैदल मार्ग पर जाने वाले एक ही मज़हबी समूह के यात्रियों को घेर लिया और उनकी जमकर पिटाई की। फिर एक आदमी को छोड़कर कहा कि मडवा जाकर अपने बाप आतंकवादियों से कह देना कि अगर हमारे काशीराम को नहीं छोड़ा गया तो हम इन सब लोगों को मौत के घाट उतार देंगे। वह आदमी

मडवा गया और आतंकवादियों ने सिपाही काशीराम को छोड़ दिया। जब काशीराम सुरक्षित घर पहुंच गया तो उन यात्रियों को हिन्दू जनता ने मुक्त कर दिया। इस प्रकार हिन्दुओं ने संगठित होकर आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने का मन बनाया। "अगर जुल्म करना पाप है, तो जुल्म सहना भी पाप है", के सिद्धान्त को ध्यान रख जनता ने आतंकवादियों को सबक सिखाया और हिन्दू भाई के प्राणों की रक्षा करने में सफल हुए।

५. साहस रक्षा की कसौटी है :-

डोडा जिले का सदूर क्षेत्र तहसील भलैस है। सन् १९४७ में इस क्षेत्र में मुसलमानों द्वारा किये गये हिन्दुओं के नरसंहार के दिल दहलाने वाले किस्से आज भी रोंगटे खड़े करते हैं। इस तहसील में २२ प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या है। अनेक ग्राम तो ऐसे हैं जिनमें एक भी हिन्दू नहीं रहता। इस क्षेत्र में २७ मई, १९९४ को श्री सुदेश वीर (भा.ज.पा. के तहसील प्रधान) तथा रा. स्व. संघ के तहसील प्रमुख श्री बलवंत जी तहसील मुख्यालय गन्दोह डाक बंगले में प्रशासनिक अधिकारियों से क्षेत्र की चिंताजनक परिस्थिति पर वार्ता कर रहे थे। वार्ता समाप्ति के पश्चात् जब गन्दोह से २ कि. मी. दूर सायं ३.३० मिनट पर ये दोनों कार्यकर्ता ग़िलबा नाले में पहुंचे तो घात लगाये बैठे १५० के लगभग आतंकवादियों ने उन पर हमला बोल दिया। इनके अंगरक्षकों ने जबाबी फायरिंग प्रारम्भ कर दी। यह मुठभेड डेढ़ घण्टे तक एक-एक कर चलती रही जिसमें बलवंत जी के अंगरक्षक हंसराज घायल हो गये। लेकिन इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सुदेश वीर अपने अंगरक्षक की बंदूक लेकर फायर करते हुए गन्दोह पहुँचने में सफल हो गये तथा सुदेश वीर के अंगरक्षक ने घायल अंगरक्षक की बंदूक लेकर मोर्चा सम्भाले रखा।

जैसे आतंकवादियों को यह जानकारी मिली कि सेना को इस मुठभेड़ का समाचार मिल गया है तो अनेक आतंकवादी भाग खड़े हुए। सुदेश वीर ने गन्दोह सेना शिविर के पास पहुँचकर हवाई फायर किया, जिसे सुनकर सेना अधिकारी उनके पास पहुंचे। पूरी घटना सुनकर सेना उनके साथ सिलवा नाला पहुँची, और मोर्चा बंदी

कर ली, फिर सेना और आतंकवादियों में उस दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में ४० मिनट तक संघर्ष चला। अंत में २ आतंकवादियों को घायल कर पकड़ने में सफलता प्राप्त हुई तथा शेष आतंकवादी भागने में सफल हो गये।

संघ के दोनों स्वयंसेवक आज भी हिम्मत से आंतकवादियों से संघर्ष करते हुए उनकी चुनौती स्वीकारते हुए गाते हैं -

"आये-आये जिस-जिस में हिम्मत है"। इन दोनों के नेतृत्व में भलैस क्षेत्र की जनता का मनोबल बनाए रखने के लिए १९९४ में हिन्दू जनता को जन्माष्टमी पर हजारों की संख्या में एकत्रित किया गया जिसमें अनेक सेना अधिकारी भी साम्मलित हुए।

६. प्राण दिये पर धरती धर्म नहीं छोड़ा :-

स्वामीराज काटिल

भद्रवाह तहसील के न्यायालय से ३० मई १९९४ को सायं ५ बजे संघ के पुराने सदैव सक्रिय स्वयंसेवक डोडा जिला भा. ज. पा. के उपप्रधान स्वामीराज काटिल पैदल मार्ग से जब अपने गॉव मोण्डा जा रहे थे तो मार्ग के बीच खेतों में सुगजी नामक स्थान पर ७-८ आतंकवादियों ने हमला बोल दिया।

आतंकवादी आधुनिक शस्त्रों से लैस थे। हमला इतना अकस्मात था कि स्वामीराज के अंगरक्षक जबाबी कार्यवाही के पूर्व ही घायल कर दिये गयें और अनेक गोलियों ने स्वामीराज जी को सदा-सदा के लिए हमसे छीन लिया। शहीद स्वामीराज जी पुण्यात्मा थे। यह ६८ वर्ष की आयु के थे। जब यह समाचार फैला तो मोण्डा व आसपास के २-३ गाँव के लोग अपने नेता की हत्या का बदला लेने घरों से निकल पड़े। उन्होंने एक ऐसे मकान को आग लगा दी जिसमें से आतंकवादी फायरिंग कर रहे थे। इस मकान में आतंकवादी के रिश्ते की एक महिला सुरैया जलकर मर गयी। परन्तु प्रशासन भी कांग्रेस

तुष्टिकरण नीति का शिकार बना न्याय का गला घोंटता है । इस घटना में जिम्मेवार आतंकवादियों को पकड़ने के बजाय स्वर्गीय स्वामीराज जी के छोटे सुपुत्र तथा अन्य अनेक युवकों पर जबाबी कार्यवाही का आरोप लगाया और केस बना दिया गया । संघ के स्वयंसेवक स्वर्गीय स्वामीराज काटिल पर २२ सितंबर ९३ को प्रातः १० बजे पहले भी आतंकवादियों ने हमला किया था जिसमें इनको २ गोलियां लगी थीं और वे घायल हो गये थे । परन्तु इनका एक अंगरक्षक हरबंस (पूर्व सैनिक) शहीद हो गया था। उस समय सेना के दबाब में प्रशासन ने स्वामीराज जी को उपचार हेतु हेलिकाप्टर से जम्मू भेज दिया । मैं (लेखक) वीर भवन जम्मू से कार्य हेतु प्रवास के लिए निकल ही रहा था तो इस घटना की जानकारी मिलते ही मुख्य अस्पताल जम्मू पहुँचा । डाक्टरों ने उपचार प्रारम्भ कर दिया था । जैसे ही स्वामीराज जी के नज़दीक पहुँचा, मेरी आखें नम थीं । परन्तु उनके दो वाक्य आज भी मेरे कान में गूंजते हैं– ''इन्द्रेश जी, आतंकवादियों को बता दें कि मैं स्वस्थ होते ही शीघ्र अपने गाँव जाऊंगा अगर वे सोचते हैं कि वह मुझे डराकर भगा देंगे तो यह उनकी गलतफहमी है । और मेरे संबंधी वह घर वालों को भी बता दें कि मैं धरती तथा धर्म छोड़ने वाला नहीं

स्वर्गीय स्वामीराज जी स्वस्थ होते ही एक दिन भी अधिक जम्मू न ठहरते हुए अपने गाँव चले गये और अन्ततोगत्वा वही शहीद हुए । श्री केदारनाथ सहानी को मौत से कुछ दिन पूर्व उन्होने यह पक्तियाँ लिख कर दी थीं ।

फल खाये इस वृक्ष के,

गंदे इनके पात ।

धर्म हमारा है यही

जले वृक्ष के साथ

इनकी स्मृति में भद्रवाह में संघ की ओर से, ''शहीद स्वामीराज काटिल पुस्तकालय'' प्रारम्भ किया गया है । १३ दिसम्बर ९४ को इनके सुपुत्र को रा. स्व. संघ के सरसंघचालक पूज्यनीय प्रो. राजेन्द्र सिंह जी ने नागरिक शोर्य पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

७. बलिदान जी उठा और बदला लिया :–

रुचिर कुमार

भद्रवाह शहर के वासुकि डेरे में रहने वाले संघ के भूतपूर्व जिला कार्यवाह व बर्तमान में भा.ज.पा. के भद्रवाह तहसील प्रधान श्री रुचिर कुमार ७ जून, १९९४ को प्रातः ६.४५ मिनट पर अपने खेत पर काम करने गये । प्रतिदिन के नित्यकर्म में इनकी धर्मपत्नी भी साथ थीं । जिस समय रुचिर कुमार [illegible] काम कर रहे थे तो इनकी पत्नी ने कहा कि देखिये, साथ के मार्ग पर जाने वाला यह मजदूर आपको घूर-घूर कर देख रहा है। रुचिर ने आदमी की ओर देखा और यह कहकर कि यह लोग तो मज़दूर हैं अपने काम में लग गया ।
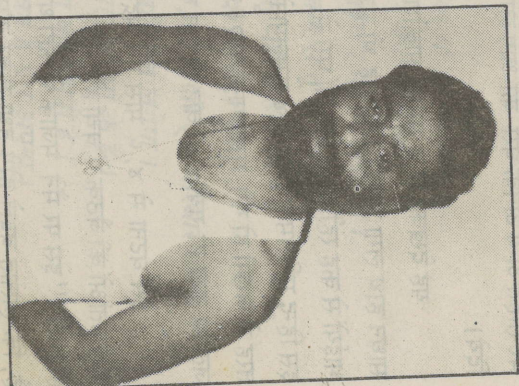
इतनी देर में कपड़े पहने, खेस ओढ़े वहीं मज़दूर वेष वाला आतंकवादी वापिस लौटा और ४-५ फूट की दूरी से ए.के. ४७ का कुंदा मारा । उसी समय आस-पास के खेतों में से छिपे ३० से अधिक आतंकवादियों ने फायरिंग प्रारम्भ कर दी । रुचिर के शरीर में १८ से अधिक गोलियाँ घुस चुकी थीं । और वहीं खेत पर रुचिर कुमार ३५ वर्ष की आयु में शहीद हो गया । पत्नी एकदम उसकी ओर दौड़ी परन्तु सन्तुलन खो बैठी और बेहोश होकर गिर पड़ी । उसने उस आतंकवादी को पास के गांव की ओर भागते देख लिया था । यह समाचार फैलते ही भद्रवाह शहर ही नहीं, पूरे क्षेत्र में तनाव फैल गया, इतने में अब्दुल हफीज़ ने जामा मस्जिद से घोषणा की कि, ''ः हिन्दू जहां मिलता है, कत्ल कर डालो, इनकी औरतों की इज्जत लूटो, जायदाद लूटो, सेना के लोगों को मारो।''

यह सुनकर मुसलमान घरों से निकल कर हत्या व लूटपाट में संलग्न हो गये। उन्होंने रुनता गाँव के ११ हिन्दू मकानों को आग लगा दी । किला मोहल्ला के छ: घर सहित अन्य अनेक घरों को आग लगा कर लगभग २२ मकान हिन्दुओं के जला दिये।

यह देखकर हिन्दू समाज आक्रोश से भर उठा और जिस नौजवान को जो भी साधन हाथ लगा उसको लिये वह भी सड़कों पर आ गया । मातायें बेटों को, बहनें भाईयों से कह रही थीं, "निकलों घरों से, अब तो मरने-मारने का वक्त आ गया हैं।" इस हिन्दू मुस्लिम मुठभेड़ में ४ मुसलमानों की हत्या हो गई। १५/२० मुसलमान बुरी तरह से जख्मी हो गये, मुसलमानों के २० से अधिक मकान तथा ६ से अधिक दुकानें जलकर राख हो गयीं । भद्रवाह में खून का बदला खून, यही नारा गूंज रहा था ।

इस घटना से ४, ५ मास पूर्व भद्रवाह के प्रवास के समय चुने हुए ८, १० कार्यकर्ताओं की बैठक में चर्चा होते-होते रुचिर ने कहा था कि, "अगली बार शायद ही मिलें ।" इस पर मैंने मजाक में कहा था कि "जब अगली बार आयेंगे, तो लगता है, कि हालात बदले होंगे तथा रुचिर कुमार को श्रद्धांजलि देने तथा स्मारक बनाने ही आऊंगा । " मुझे नाज़ भी है और दु:ख भी है क्योंकि इस व्यक्तित्व के निर्माण में मेरी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । भद्रवाह का अति लोकप्रिय युवक था, रुचिर कुमार। यह दूसरा प्रसंग था, जब मैं स्वयं रोया था । भद्रवाह इलाके में सचमुच में दो-तीन दिन सैकड़ों नहीं, हजारों घरों में चूल्हे नहीं जले ।

- शहीद रुचिर कुमार अमर रहे -

स्व. रुचिर कुमार की याद में भद्रवाह के संघ के कार्यकर्ताओं ने शहीद रुचिर कुमार व्यायाम शाला के दो केन्द्र प्रारम्भ किये हैं । आज भी अनेक मुस्लिम नेता कहते हैं कि "अगर हिन्दुओं के पास आधुनिक हथियार होते, तो इन्होंने आतंकवादियों तथा पाकपरस्त मुसलमानों से भद्रवाह खाली करवा लिया होता और ऐसे तत्वों को मार-मारकर पाकिस्तान खदेड़ दिया होता । आज प्रत्येक घर में यही नारा गूंजता है- जीने दा ढंग सिखा ई गया ओ, भद्रवाह दा रुचिर कुमार ।"

सितम्बर, १९९४ में श्री गुरु दक्षिणा कार्यक्रम पर मैं भद्रवाह में था । उस कार्यक्रम में स्व. रुचिर के पिता श्री विद्या प्रकाश कौल ने शहीद पुत्र का चित्र व कविता समर्पित की -

जलकर तू बाज न आया, तू भारत माँ का परवाना ।
खुद तो तू अमर हुआ है, हमें कर गया वीराना ।
भारत माँ की अखण्डता का, निश्चय मन में ठाना था ।
भारतवासियों की एकता का, जन्म से तू दीवाना था ।
भारत हमारी माता है, हर वक्त तू यही कहता था ।
प्राणों की आहुति दूँगा, रक्त इसी पर बहा दूंगा ।
कण - कण में ध्वज एक रहेगा, हर प्राणी एक परिवार बनेगा ।
ऐसे भारत के हित में, मेरा ही बलिदान लगेगा ।
मेरे बच्चे मेरे नहीं हैं, अब तो यह मेरी माँ के है ।
मेरी पत्नी मेरी नहीं हैं, भारत माँ की सुपुत्री है ।
मेरी माँ, मैं तेरा अपना, भारत वर्ष है मेरा अपना ।
प्यार करें सब भारत माँ से, यही है मेरा अंतिम सपना ।
भारत माँ पर मिटने की, मन में मैंने ठानी है ।
देशद्रोही कपटी पर, आफत मैंने लानी है ।
मरकर भी तो अमर रहूँगा, मन में मैंने ठानी है ।
प्यारे पूज्य पिता ने मुझको, गीता का यह वरदान दिया है
शत्-शत् वार जन्म लू भारत में, यही मेरी अभिलाषा है ॥

८. कांग्रेसी प्रशासन की छद्म धर्म निरपेक्षता ने देशभक्ति का गला घोंटा-

स्व. रुचिर की मौत पर हिन्दु समाज ने मुंह तोड़ जबाब दिया । देश भर ही नहीं, पूरे विश्व के संचार माध्यमों ने इस घटना को उजागर किया । परन्तु छदम धर्म निरपेक्ष सरकार आतंकवांदी व फसादियों को ढूंढने, पकड़ने व मारने के बजाय उल्टे

हिन्दू युवकों को ही झूठे मुकदमों में फसानें का षडयंत्र करने लगी । किन्तु जनता व सेना के दबाव के कारण प्रशासन को मस्जिद से हिन्दू व सेना को मारने की घोषणा करने वाले अब्दुल हफीज बानी और अन्य जावेद मलिक खान को पकड़ना पड़ा। परन्तु इसके साथ-साथ संतुलन बनाने के लिए सनातन धर्म सभा, भद्रवाह और डोडा जिले के महामंत्री श्री फकीर चंद राजदान को भी पकड़ लिया । उन पर एक झूठा आरोप लगाया कि यह जम्मू तथा दिल्ली में बड़े अफसर तथा नेताओं को उकसाने वाले टेलिग्राम व पत्र संदेश भेजकर हालात बिगाड़ रहे थे । वाह री सरकार तथा उसकी धर्म निरपेक्ष न्याय प्रक्रिया का विचित्र संतुलन ! भारत माता की जय बोलने वाले तथा भारत माता को डायन कहने वाला, एक ही पलड़े में ?

७० वर्षीय श्री फकीर चंद राजदान की आयु का भी लिहाज नहीं किया गया। उनकों डोडा के इंटेरोगेशन सैल में रखा गया। पूछताछ में जब कुछ नहीं मिला तो प्रश्न था कि कैसे छोड़ दें - देशभक्त मानवतावादी को, संघ स्वयंसेवक को ।

बार-बार धरने दिये, उच्च अफसरों से मिले, अन्ततोगत्वा ३४ दिनों तक जेल में रखने के पश्चात फकीर चंद राजदान के साथ-साथ दोनों देशद्रोहियों अब्दुल हफीज बली व जावेद मलिक खान को भी छोड़ा गया ।

कानून पालन करने वाले तथा कानून तोड़ने वालों को एक ही सजा-वाह री सरकार, क्या तेरा इंसाफ ?

९. हत्यारे आतंकवादी को जीवित जला डाला -

किश्तवाड़ शहर में ११ जून, १९९४ को सायं ५ बजे, सुभाष सेन नामक एक नौजवान अपने अतिप्रिय मित्र फारुख पीर के घर के अंदर उसकी बहन के विवाह में सम्मिलित होने गया । खुशी से नाचने-गाने के बाद जब वह बाहर दरवाजे की ओर देख रहा था उस समय पीर के घर के अन्दर ही पहले ही से मौजूद आतंकवादी ने सुभाष सेन की गोलियाँ मारकर हत्या कर दी, सारा माहौल स्तब्ध रह गया ।

जब हत्यारा हत्या करके घर से भागा, तो सुभाष के अन्य हिन्दू मित्रों ने उसका पीछा किया । आतंकवादी फायर करता हुआ सरकूट नामक बस्ती की ओर भाग रहा था । इस सारे दृश्य को देखकर मार्ग में काम करने वाले व कुछ राहगीरों ने उस आतंकवादी का पीछा शुरु किया ।

आतंकवादी गोलियाँ चला रहा था, परन्तु बहादुर हिन्दू जनता इसकी परवाह न करते हुए पीछा कर रही थी । आतंकवादी भागते-भागते सरकूट ग्राम की मस्जिद के अन्दर घुस गया । लोगों ने मस्जिद घेर ली, दो-तीन लोगों ने सेना से संपर्क साधा, सेना मदद पर आ पहुंची । सेना के बार-बार सर्मपण की अपील पर बनी यह आतंकवादी गोलियाँ चलाता रहा और एक ग्रेनेड भी सेना पर फैंका । इसी मुठभेड़ तथा जवाबी कार्यवाही में वह आतंकवादी उस मस्जिद सहित जलकर राख हो गया।

जब संघ के प्रमुख अधिकारी स्व. सुभाष सेन के घर पर दु:ख में भागीदारी हेतु गये तो उसके पिता कहते है, कि हिंदू-मुस्लिम एकता पर से भरोसा उठ गया है। उन्होंने कहा कि वह तो अपने आपको धर्म निरपेक्षता व हिंदू-मुस्लिम भाइचारे के सबसे बड़े समर्थक मानते थे, परंतु फारुख पीर के घर से कोई अफसोस प्रकट करने नहीं आया। अब मेरा कांग्रेस से भरोसा उठ गया है, परंतु आज तक उस पिता व विधवा बहिन को न्याय नहीं मिला ।

१०. हाथ कटवाया, परंतु आतंकवादी को मार गिराया -

एक अफगान उग्रवादी ने जो कि शस्त्रों से लैस था, १९ जुलाई, १९९४ को ग्राम कैंथा तहसील-रामनगर में एक हरिजन परिवार बलिराम के घर रात्रि बितायी । अफ़गानी आतंकवादी ने कैंथा की दुकानें तथा आर्मी कैम्प रामनगर के बारे में पूछताछ की । प्रात: उस उग्रवादी के चले जाने के बाद बलिराम ने यह सारी बात गाँव के बड़े दुकानदार राजकुमार सुपुत्र श्री त्रिलोक चंद को बतायी। परन्तु थोड़े समय के पश्चात ही २० जुलाई को प्रात: ११ बजे वह उग्रवादी राजकुमार की दुकान पर आया और पूछने लगा कि दुकानें बंद क्यो हैं? उस समय भारी वर्षा हो रही थी । वह अफगानी आतंकवादी बातें करते-करते घर में घुस गया और घर में खड़े दूसरे भाई रमेश चंद से छाता मांगा । अभी इनकी आपस में बातचीत हो रही थी तभी तीसरे भाई मास्टर मदनलाल जी ने इस अफगानी आतंकवादी को पकड़ लिया और दोनो भाई उस पर टूट पड़े । राजकुमार ने उसको नीचे गिरा दिया । रमेश चंद ने ए. के. ५६ बंदूक को छीन लिया और मास्टर मदन लाल ने भी उसको पकड़े रखा । इतने में अत्याधिक फुर्ती से राजकुमार ने उस पठान आतंकवादी के पेट में छुरा घोंप दिया जिसके कारण

वह जोर से चिल्लाया, और उसकी आंतड़ियाँ बाहर निकल आयीं। उसने यह जानकर कि उसे जीवित नहीं छोड़ेगे तो उन सभी भाईयो को धमकी दी कि मेरे आदमी पीछे हैं, वे आप लोगों से चुन-चुन कर बदला लेंगे। और उसने स्वयं को छुड़ाते हुए तेजी से जेब से ग्रेनेड निकाल उसकी पिन निकाल कर ग्रेनेड को फैंकने का प्रयत्न किया। इस धक्का-मुक्की में ग्रेनेड वहीं फट गया और उस आतंकवादी के चिथड़े-चिथड़े उड़ गयें, परन्तु रमेश चंद का भी हाथ उड़ गया। उसके भाई मदन लाल का एक बाजू बाद में आपरेशन में काटना पड़ा तथा राजकुमार के पेट में चले गये छर्रों को आपरेशन करके निकाला गया।

इस प्रकार से तीनों निहत्थे युवकों ने अपनी जान पर खेल कर घर तथा गाँव की प्राण रक्षा करते हुए उस पठान आतंकवादी को मार गिराया। इन युवकों को १४ दिसम्बर ९४ को पू. सरसंघचालक जी प्रो. राजेन्द्र सिंह जी ने नागरिक शौर्य पुरस्कार प्रदान कर इनके साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

११. मौत वापिस लौट गई -

श्री निरंजन नाथ शर्मा विद्यालय अध्यापक नित्य के समान किश्तवाड़ से ८ कि. मी. दूर लाचिल नामक गांव में अपने विद्यालय जा रहे थे। इनको क्या मालूम कि मौत आतंकवादी दरिन्दों के रुप में इनको घेर रही है। एक अगस्त, १९९४ प्रात: १० बजे अपने आतंकवादियों ने विद्यालय के नजदीक इनको घेर लिया और कहने लगे, "तुम अपने आप को बड़े देशभक्त समझते हो।" बात बिगड़ती गई। निरंजन शर्मा तथा आतंकवादियों में तू-तू मैं-मैं होने लगी, हाथापाई की नौबत आने पर निरंजन शर्मा आतंकवादियों पर टूट पड़े और एक आतंकवादी से हथियार छीन लिये। इतने में मौका पाकर दूसरे आतंकवादी ने इन पर तेज धार वाले टोके से प्रहार करने शुरु कर दिये जिससे निरंजन शर्मा खून से लथ-पथ होकर धरती पर गिर पड़े। आतंकवादी इनकों मृत समझकर भाग खड़े हुए।

जब इस घटना का पता किश्तवाड़ में चला तो शर्मा जी को लाचिल से किश्तवाड़ लाया गया और उपचार हेतु अस्पताल भर्ती कराया गया। यह बंधु ६ दिनों के बाद होश में आये। इनके गर्दन, सिर एवं गले में कुल १२४ टाके लगे तथा २६

बोतलें खून की चढ़ाई गईं। अन्ततोगत्वा इनके प्राणों की रक्षा हुई। मौत आई, परन्तु वापिस लौट गई

संघ के स्वयंसेवक होने के कारण १ वर्ष पूर्व आतंकवादियों ने उनके घर पर हमला बोल सारा सामान लूटने की कोशिश की थी। परन्तु मास्टर निरंजन ने उन्हें उल्टे पांव भागने को विवश कर दिया था। उस समय आतंकवादियों ने धमकी दी थी कि, "मास्टर तू आर. एस. एस. का आदमी बहुत खतरनाक है, मुकाबला करता है, देशभक्ति की बातें करता है, हम तुझे नहीं छोड़ेगे।" परन्तु निरंजन शर्मा उनकी धमकियों से डरें नहीं और आज भी किश्तवाड़ में पूरे हिम्मत हौंसले से रह रहे हैं।

मास्टर का यह संदेश है कि वह देश भक्ति की मशाल न बुझ सकती है और न कुचली जा सकती है।

१२. सशस्त्र आतंकवादी का पत्थरों से मुकाबला -

दिनांक २१ अगस्त १९९४, डोडा तहसील के नगरी गाँव का एक युवक पंछीराम दोपहर १ बजे रक्षाबंधन के त्यौहार के निमित अपनी बहिन के घर मिलने पैदल मार्ग द्वारा काश्तीवाड़ जा रहा था। रास्ते में उसे अपने ही गाँव का एक व्यक्ति दिखाई दिया। उसे देखते ही इसके मन के तार हिले, "अरे यह संदिग्ध ही नहीं, प्रत्यक्ष आतंकवादी भी है।" पहले तो दोनों अपने-अपने रास्ते पर बढ़ गये। परन्तु यह सोचकर कि पंछीराम पुलिस से न बतादें अकस्मात वह आतंकवादी मुड़ा और पंछीराम की हत्या करने के विचार से उसने अपना हाथ जैकेट में डाला ताकि अन्दर रखे हथियार को निकाल सके। पंछीराम को पहले ही शक हो चुका था, इसलिए वह सावधान तथा तैयार था। इससे पहले कि आतंकवादी हथियार निकाल कर उसकी हत्या करता, पंछीराम उस आतंकवादी पर टूट पड़ा। दोनों में हाथापाई शुरु हो गई। आतंकवादी अपने आपको संभालता, इससे पहले ही पंछीराम ने बजरंग बली को याद कर उस पर तेज मुष्टि प्रहार मारकर काबू पा लिया। पंछीराम तो खाली हाथ था परन्तु उसने धरती से पत्थर उठाया और आतंकवादी के सिर पर पत्थर से कई चोटें मारता रहा, वह आतंकवादी चिल्ला-चिल्ला कर अपने छिपे हुए साथियों को बुलाने की कोशिश

करता रहा, परन्तु पंछीराम ने इतनी तेजी से मारा कि आतंकवादी खून से लथ-पथ हो बेहोश हो गया। इससे पूर्व कि आतंकवादी के अन्य साथी पहुँचते, पंछीराम वहाँ से भाग खड़ा हुआ। पंछीराम ने बहादुरी से काम लेकर सशस्त्र आतंकवादी को पत्थरों से घायल कर अपने प्राणों की रक्षा की।

परिस्थिति को देखकर घबराओं नहीं, बल्कि चपलता से इतना तेज हमला करो कि दुश्मन घबरा उठे। यह है पंछीराम के साहस की सीख।

१३. एकजुट लोगों ने बड़े-बड़े खूंखार आतंकवादी भगाये (बाग्नाकोट, ठण्डाकोट गाँव प्रेरणा बन गये)-

ऊधमपुर जिले के अति दुर्गम पहाडी क्षेत्र के दो गांव हैं - बाग्नाकोट और ठण्डाकोट। यहां के हिन्दुओं ने अपनी विलक्षण वीरता से अपने जान माल की रक्षा करने के साथ-साथ समाज को भी शान से जीने का मार्ग बताते हुए आतंकवादियों को मुंह-तोड़ जवाब दिया। १७ सितंबर, १९९४ को लगभग ४० आतंकवादियों ने भूतपूर्व फौजियों के इन गाँवों को घेर लिया तथा हिंदुओं पर अंधाधुंध फायरिंग प्रारंभ कर दी। गांव में अनेक लायसैंस प्राप्त पुरानी तोड़ेदार बंदूकें थीं। इन बंदूकों में हर बार चलाने के बाद बारुद भरना पड़ती है। दूसरी ओर आतंकवादी आधुनिक शस्त्रों से लैस थे। इसके बावजूद गाँववालों ने मोर्चा संभाला। पुरुषों के पीछे खड़ी महिलाएं बंदूकों में बारुद भरने का काम तेजी से कर रही थीं। यह मुठभेड़ ५ घंटे तक चली। २ ग्रमीण बंधु बलिदान हो गये। परन्तु गाँव के लोंगों ने अनेक आतंकवादियों को घायल कर दिया। अन्ततोगत्वा आतंकवादियों के पाँव उखड़ गये और वे भाग खड़े हुए। आतंकवादी मृत अथवा घायल साथियों को अपने साथ उठा कर ले गये।

१४. कायरता नहीं - बलिदान ही ज़िन्दिगी है :-

किश्तवाड़ तहसील के ठकराई क्षेत्र के ग्राम घड़ा में रहने वाले अध्यापक सेवाराम ठाकुर ठकराई से किश्तवाड़ आने वाली बस में, जो कि यात्रियों से खचाखच

सेवाराम ठाकुर

भरी हुई थी, बैठे आ रहे थे। १३ सितम्बर, १९९४ सायं ४.३० बजे बस जैसे ही कौड़िया पुल पर पहुंची, तो अकस्मात पहले से बस में बैठे तीन सशस्त्र आतंकवादियों ने अपने हथियार दिखाकर बस को रुकवा दिया। आतंकवादियों का उद्देश्य बस का अपहरण करके बस के यात्रियों की हत्या करने का था एक आतंकवादी चकमा देकर ड्राईवर के नजदीक पहुँच गया, शेष दो थोड़ा पीछे बस में खड़े थे। बस में बैठे यात्री सहम गये। सभी के चेहरे उतरे हुए थे और डरे-डरे अपनी-अपनी सीट पर बैठे थे।

आगे आने वाले आतंकवादी ने बस के चालक को कहा कि "बस को छात्रु मार्ग पर ले चलो।" यह सुनकर ड्राईवर की सीट के पीछे, दो-तीन सीट छोड़कर बैठे सेवाराम ठाकुर गरज उठे, "नहीं, बस छात्रु नही, किश्तवाड़ जायेगी।" यह सुनकर आतंकवादी भड़क उठे और पिछले दो आतंकवादी पास बैठे सेवाराम पर झपट पड़े। परन्तु इससे पहले कि आतंकवादी वार करते, सेवाराम उन दोनों पर टूट पड़े और अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर से दोनों के शरीर बगल में दबोच लिये तथा गर्दनें हाथों की उंगलियों से दबानी शुरु कर दी। दोनों आतंकवादियों के हाथों से हथियार छूटने लगे। आगे वाले तीसरे आतंकवादी को सतपाल (सत्ता) नामक १६ वर्षीय बालक ने मौका पाकर पीछे से दबोच लिया। तीनों आतंकवादियों को काबू में कर लिया गया। परंतु भाग्य में कुछ ओर ही लिखा था। अकस्मात एक व्यक्ति ने ही सतपाल को कहा कि "इसे छोड़ दो, यह हमें कुछ नहीं कहेगा।" इस पर से सतपाल की पकड़ ढीली हो गई और वह आतंकवादी छूट गया। यह सारा खेल क्षणों में ही हो गया। यात्रियों में भगदड़ मची थी, इस मौके का लाभ उठाकर छूटने वाले आतंकवादी ने बस से नीचे उतरकर हवा में अंधाधुंध फायर किये और फिर बस में चढ़कर सेवाराम ठाकुर पर कई गोलियाँ चलाकर उसे शहीद कर दिया। उस समय बस में पास की सीट पर भयग्रस्त बैठे एक

व्यक्ति ने बताया कि सेवाराम ठाकुर ने खून से लथपथ गिरते-गिरते तीन बार बोला, "भारत माता की जय"। पहले आवाज ऊँची थी, परंतु फिर धीमी होती चली गई और उस वीर का शरीर एक तरफ लुढ़क गया।

सेवाराम ठाकुर रा. स्व. संघ के प्रथम वर्ष शिक्षित कार्यकर्ता थे। वर्तमान में उनके ऊपर तहसील प्रमुख का दायित्व था। इन्होंने अपना अमर बलिदान दिया, परंतु कायर नहीं बनें। स्व. सेवाराम के पीछे इनके ८२ वर्षीय वृद्ध पिताजी, विधवा भाभी, चार भतीजें / भतीजियां एवं पत्नी व ३ छोटे-छोटे बच्चे रह गये हैं। बड़े भाई की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। इनके पिता आजाद हिन्द फौज के सेनानी रहे हैं। इन्होंने अपने बलिदान से बस में बैंठे ३२ यात्रियों की जानमाल की रक्षा करके उन शहीदों की श्रृंखला में नाम जोड़ दिया, जिनका देश सदैव ऋणी रहेगा। आतंकवादी के इस सपने को इन्होंने चूर-चूर कर दिया कि वे दूसरी बस का अपहरण कर सकें। इससे पूर्व १४ अगस्त, १९९३ को एक बस अपहरण में १६ हिंदू यात्रियों को मारकर आतंकवादियों ने समाज के मनोबल को तोड़ने का प्रयास किया था।

तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें। यह गीत ही इन शहीदों की जिन्दगी रही है।

१५. अदम्य साहस से प्राण रक्षा हो सकी, परंतु पुत्र को प्रचारक बने रहने की प्रेरणा दी -

भद्रवाह तहसील के कपरा नामक ग्राम में रहने वाले सेना से अवकाश प्राप्त सूबेदार चुन्नी लाल शर्मा, २३ सितंबर, १९९४ की सायंकाल को अपने घर के नजदीक ही अपनी गाय को चरा रहे थे। सायं ५.५३ मिनट पर उन्होंने अपनी धर्म पत्नी को आवाज दी कि वह आकर गाय को घर ले जाये। इसी के साथ उन्होंने गाय को वहीं छोड़ दिया और मक्की तोड़ने नीचे खेत में कूद पड़े। सूबेदार चुन्नी लाल शर्मा ने तीन मक्कियाँ तोड़ी और ऊपर आने के लिए खेत से बाहर मार्ग पर पहला पैर रखा ही था कि उन्होंने देखा कि उनके सामने ८.१० गज की दूरी पर हथियार बंद आतंकवादी खड़ा है जो कि संभवतया काफी देर से झाड़ियों के पीछे छुपा बैठा था। सूबेदार चुन्नी

लाल शर्मा क्षणभर के लिए रुके और सोचा कि अब प्राण नहीं बचेंगे परंतु अगले ही क्षण उन्होंने हिम्मत बांधकर आतंकवादी को चुनौती देते हुए सामने छलांग लगा दी। आतंकवादी इस ललकार से थोड़ा सहमा, परंतु उसी समय ए. के. ४७ बंदूक के कुंदे से मारा और एक साथ ८-९ गोलियां पास खड़े वृक्ष पर जा लगी। अभी गाय खेत में ही खड़ी थी, वह भाग खड़ी हुई और उसकी आड़ ले सूबेदार चुन्नी लाल शर्मा जी अपने घर पहुँच गये। वहाँ से उन्होंने अपनी बंदूक उठाई और आतंकवादी को ललकारते हुए बाहर निकले और कहा, "ओ। इस्लाम के ठेकेदार। दम है तो सामने आ। अब मेरे पास भी बंदूक है और तेरे पास भी।" यह कहते हुए उन्होंने एक के बाद एक कई फायर कर दिये। परन्तु आतंकवादी पहले ही डरकर भाग चुका था। आसपास से लोग इकट्ठे होने लगे। पता चला कि आतंकवादी एक नहीं अनेक थे और उन्होंने सारा क्षेत्र घेरा हुआ था। परंतु सूबेदार साहब की फुर्ती, सूझबूझ और साहस ने उनकी अपनी ही नहीं, बल्कि अनेकों के प्राणों की रक्षा की।

सूबेदार चुन्नी लाल जी संघ के स्वयंसेवक हैं तथा इनका एक सबसे छोटा बेटा राजेश शर्मा जम्मू विभाग में सुंदर बनी तहसील और कालाकोट तहसील के प्रचारक के रुप में दायित्व संभाले हुए है। जब राजेश को यह सारा समाचार मिला तो वह अपने घर गया और उसके कुछ दिन घर रहने पर एक दिन पिता जी पुत्र को कहने लगे कि "देखो बेटा, घर पर क्या करोगे, सारा दिन न तो चौकीदारी हो सकती है और न ही तुम मेरे साथ घूम सकते हो। हम अपना देख लेंगे। तुम अपना कर्तव्य निभाने हेतु कार्यक्षेत्र में जाओ"। संकट में पड़े पिता ने ही पुन: बेटे को संघ प्रचारक के रुप में कार्य करते रहने की प्रेरणा दी।

१६. इकलौता पुत्र भेंट चढ़ा दिया -

किश्तवाड़ नगर हिन्दू रक्षा समिति के उप-प्रधान श्री प्रवीण गुप्ता २६ दिसंबर, १९९४ को सायं ५.३० बजे अपनी दुकान बंद करके घर जा रहे थे। नगर के मुख्य बाजार से जाते समय एक परिचित बंधु की दुकान पर जैसे ही प्रवीण बाबू रुके, वहां पहले से ही उनके रास्ते में उनकी प्रतीक्षा कर रहे दो उग्रवादियों ने पिस्तौल से ३ गोलियां चलाकर उन्हें गंभीर रुप से घायल कर दिया। बाजार तथा शहर में हल्ला मच गया।

लोग दूकान, घर छोड़कर प्रवीण को देखने अस्पताल की ओर दौड़ पड़े । परंतु इस ३० वर्षीय नौजवान को बचाया नहीं जा सका। एक घंटे के उपचार के हर संभव उपाय के बाद प्रवीण बाबू का बलिदान हो गया ।

प्रवीण अपनी माता, पिता का इकलौता पुत्र था। उसकी मौत से वंश ही रुक गया। प्रवीण "शेरु" के नाम से प्रसिद्ध था। हिन्दुओं के प्रत्येक त्यौहार में उसका जयकारा तथा देश-भक्ति के गीत गूंजे बिना त्यौहार फीका-फीका रहता था। सुंदर, बांका, हंसमुख और सभी का प्यारा युवक था। पूरा परिवार ही संघमय था। शेरु शाखा का सक्रिय स्वयंसेवक था। श्री श्रीगोपाल व्यास (मध्य क्षेत्रीय प्रचारक) तथा मैं जब घर पर सांत्वना देने गये तो देखते है कि माँ / बाप छत को निहारते यही कहते हैं कि वंश ही देश के लिए बलिदान हो गया। और क्या बचा है जो धर्म के लिए दें ?

१७. देशभक्ति मज़हब से बड़ी है -

उग्रवादी २६ मार्च, १९९५ को गांव डग्गर, क्षेत्र बनी, तहसील बसोहली के विश्राम गृह में ठहरें । अगले दिन रात्रि ये आतंकवादी डग्गर निवासी एक मुख्य अध्यापक के घर पहुंचे तथा भोजन बनाने का हुक्म दिया। मुख्याध्यापक घबरा गये तथा साथ के अन्य एक अध्यापक की मदद से भोजन बनाने लगे। भोजन कर ये सभी उग्रवादी पास के अन्य गाँव डुग्गन में पहुँचे। वहाॅ पर पूर्व सैनिक सफदर अली के घर पर विश्राम करने के लिए घुसने लगे, परंतु सफदर अली के इंकार करने पर ये सभी आतंकवादी किसी दूसरे मुसलमान सनंदु के घर पर रात्रि बिताने चले गये। इतनी देर में सफदर अली ने बनी पुलिस स्टेशन को उर्दू में पत्र भेज दिया जिसका अनुवाद इस प्रकार से है।

"कुछ संदेहात्मक व्यक्ति इस क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं " और मो. शरीफ के घर पर हैं। आप कृपा करके पुलिस लेकर छापा मारें। हमारी सबकी जान को यहां पर खतरा है। मेरा कोड समझें।

आपका शुभ चिंतक

(सफदर अली)

पत्र मिलने पर एस.एच.ओ. बनी ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परंतु थोड़े समय के पश्चात २८ मार्च को मुख्याध्यापक महोदय भी रात भर पैदल बचबच कर चलते हुए दोपहर में बनी पुलिस स्टेशन पहुँच गये और मुख्याध्यापक ने पूरी घटना बतायी तब पुलिस अफसर हरकत में आये।

२९ मार्च की प्रात: ही श्री दलजीत सिंह जी के नेतृत्व में केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस, सीमा सुरक्षा बल तथा जम्मू कश्मीर पुलिस सीधे सफदर अली के घर डुग्गन पहुँचे। सफदर अली ने दुश्मन का ठिकाना बताया और कहा कि वे तो तैयार हैं, आप लोग भी शीघ्र ही पोजीशन ले लेंवे। सेना ने मोर्चाबंदी प्रारंभ कर दी और जिस घर में आतंकवादी थे उसको घेरे में ले लिया। उग्रवादियों को पहले ही जानकारी मिल चुकी थी कि वे घेरे जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने पहले ही सेना पर गोलियाँ चलाना शुरु कर दिया। सलामुद्दीन नामक व्यक्ति ने अफसर महोदय को कहा कि "मकान के निचले भाग में से महिला तथा बच्चों को बाहर निकाल लेते हैं," अफसर ने उसका कहना मान लिया और महिलाओं तथा बच्चों को मकान से बाहर निकालते ही सेना ने भी जवाबी कार्यवाही शुरु कर दी। सफदर अली भी सेना में रहा था और वर्तमान में भा.ज.पा. का कार्यकर्ता भी था। वह भी अपनी बंदूक लेने घर पर गया और जब वह बंदूक तथा गोलियां लेकर उग्रवादियों के खिलाफ मोर्चा संभाले हुआ था उसी समय उसके मर्म स्थल पर गोली लगी और देशभक्त देश की रक्षार्थ शहीद हो गया।

उग्रवादी संख्या में ८ थे। इनमें से एक गोलियाँ चलाता रहा परंतु ७ ने भागने का प्रयास किया। गोलियाँ चलाने वाला एक उग्रवादी घायलावस्था में पकड़ा गया और उसने बनी अस्पताल में उपचार के लिए ले जाते समय दम तोड़ दिया। दूसरा आतंकवादी भागते समय गोलियाँ लगने से घायल हो कर गिर पड़ा और पकड़ा गया।

सफदर अली सामाजिक कार्यकर्ता था। सदैव लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहता था। भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्य होने के नाते हमेशा कहता था, "मेरे देश व धर्म को भा.ज.पा. ही बचायेगा, बाकी राजनैतिक दल तो हम मुसलमानों को लूटते हैं।"

इस जवान के कारण गाँव के अनेक लोगों की जानें बच गईं । परंतु इस वीर के पीछे घर में छोटे पांच बच्चें व धर्म पत्नी है, जो बहुत गरीब हैं । सरकार ने अभी तक इसके परिवार को कुछ भी सहायता नहीं दी है । सफदर अली कहता था कि "जाति, पार्टी, मज़हब अनेक हैं, परंतु भारत माँ एक है ।"

१८. मोर्चा सम्भालते ही आतंकवादियों में जान बचाने की भगदड़ मची

जिला डोडा में १९९० से लगातार आतंकवादियों की यह कोशिश रहती रही है कि वहां का राष्ट्रीय समाज १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह न मना सके। इसके लिए यह तबसे प्रत्येक १३-१४ अगस्त को कोई ऐसी बड़ी दुखदायी घटना करता है जिसके कारण १५ अगस्त के समारोह वहां मनाने कठिन हो जाते हैं।

भद्रवाह के ग्राम पनैजा में १४ अगस्त १९९२ रात को १०० से अधिक आतंकवादियों ने पनैजा गाँव को घेर लिया । इनका उद्देश्य कई लोगों की हत्या करके घरों को आग लगा कर, लूटपाट करने का था। आतंकवादियों ने श्री रमेश कोतवाल के घर पर हमलाकर दिया। श्री रमेश ने जब यह देखा तो उन्होंने हिम्मत का परिचय दिया। अपने भाइयों के साथ आतंकवादियों से मुकाबला करने के लिए २ मोर्चे संभाल लिए। इन्होंने आतंकवादियों के साथ लगातार मुकाबला किया। इस संघर्ष में कुछ आतंकवादी घायल हो गए। अंत में आतंकवादी भाग खड़े हुए। श्री रमेश ने हिम्मत दिखा कर अपने गांव की रक्षा की ।

श्री रमेश को नागरिक शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

१९. आतंकवादी सिगरेट से उसका शरीर दागते रहे और उसके मुंह से निकलता रहा 'हिन्दुस्थान जिन्दाबाद'

भद्रवाह शहर के गुप्त गंगा नामक निर्जन स्थान पर श्री प्रेम लाल शर्मा अपने

परिवार सहित रहते हैं। यहां इनका एकमात्र घर है। २६ सितम्बर, १९९२ को ६ आतंकवादी इनके घर में घुस आए । आतंकवादियों ने इनके परिवार के सदस्यों को डराया, धमकाया और प्रेम लाल के बारे में पूछने लगे, जब घर वालों ने नहीं बताया तो उनको यातनाएं देने लगे। इस पर प्रेमलाल इन आतंकवादियों पर टूट पड़े लेकिन आतंकवादियों ने बंदूक की नोक पर उन्हें बेबस कर दिया।

फिर उन्हें कई तरह की यातनाएं देकर कई तरह की बातें पूछने लगे परन्तु प्रेमलाल अपनी देश भक्ति से विचलित नहीं हुऐ।

अंत में आतंकवादियों ने सिगरेटें जलाकर उनके शरीर पर कई घाव किए और जलती हुई सिगरेट से प्रेम लाल के बाएं हाथ की बाजू में पाकिस्तान जिन्दाबाद लिख दिया लेकिन प्रेम लाल के मुंह से हिन्दुस्तान जिन्दाबाद ही निकलता रहा। प्रेम लाल को यह स्थान खाली करके, वहां से भाग जाने की चेतावनी देकर आतंकवादी चले गए।

परन्तु प्रेमलाल डरे नहीं। आज भी वहां अकेला घर होने पर भी हिम्मत केसाथ रह रहे हैं। यह गुप्त गंगा मंदिर में पुजारी भी है। यह कहते है भाग कर जाएंगे कहां, यहीं जिएंगे यही मरेंगे।

इन्हें नागरिक शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

२०. आतंकवादियों का प्रतिरोध करते हुए वह शहीद हो गए ।

डोडा तहसील के ग्राम बजारनी के शहीद मोहन सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तहसील डोडा के कार्यवाह थे। यह स्वर्गीय संतोष ठाकुर के साथ मिलकर आतंकवाद के विरूद्ध लड़ाई लड़ रहे थे । संतोष ठाकुर (भाजपा जिला डोडा के महामंत्री) को आतंकवादियों ने ९ दिसम्बर, १९९२ सायं ४.३० बजे न्यायालय से घर जाते समय शहीद कर दिया था. इसके बाद तो पूरा कार्य मोहनसिंह को ही करना पड़ रहा था। यह प्रतिदिन सेना व प्रशासन से सम्पर्क करके आतंकवादियों के ठिकानों

का पता देते रहते थे। सेना को मार्गदर्शन देने के लिए सेना के साथ साथ भी चलते थे। इनके कार्यों से आतंकवादी परेशान हो गए और कई धमकी भरे पत्र मोहन सिंह को भेजे। परन्तु इन धमकियों के सामने यह विचलित नहीं हुए। १९ फरवरी १९९३ को जब मोहनसिंह डोंडा से बजारनी अपने गांव गए तो लगभग ५० आतंकवादियो ने रात्रि ८ बजे इनके घर व गाँव को घेर लिया। मोहन सिंह ने आतंकवादियों पर हमला कर दिया परन्तु आधुनिक शस्त्रों से लैस आतंकवादियों ने मोहन सिंह को दबोच लिया और निर्दयता के साथ इन्हें यातनाएं देकर शहीद कर दिया। तीन दिन तक इनका शव भद्रवाह को-आपरेटिव सोसायटी की दुकान पर लटकता रहा। बाद में चौथे दिन पुलिस वहां गई और इनके शव को लेकर आई।

मोहन सिंह लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए। तीन दिन के बाद लोगों को यह गुप्त सूचना मिली कि मोहन सिंह की हत्या में सम्मिलित आतंकवादी फारवान गांव में एक स्थान पर बैठे हैं। लोगों ने उन पर धावा बोल दिया। आतंकवादियों ने गोलियों की बौछारें शुरू कर दीं। संघर्ष में उस स्थान के ऊपरी हिस्से पर आग लग गई । अंत में आतंकवादी घायल होकर भाग खड़े हुए।

२१. आंतकवादियों से लड़ कर गांव की रक्षा की

भद्रवाह तहसील के अठखार क्षेत्र में ग्राम मरतिगल में दिनांक ५-६ नवम्बर ९२ को रात्रि में श्री इन्द्र मिन्हास के भाई के घर को लगभग ५० आतंकवादियों ने घेर लिया। आतंकवादी घर के सदस्यों को मार कर गांव से धन लूट कर भाग जाना चाहते थे । परन्तु इन्द्र मिन्हास व संजीव मिन्हास रात को ग्राम के पहरे पर थे। जब इन दोनों ने आतंकवादियों को यह हरकत करते हुए देखा तो इन्होंने उनके ऊपर हमला बोल दिया।

आतंकवादियों ने गोलाबारी शुरू कर दी। रात भर यह संघर्ष होता रहा। आतंकवादी अधुनिक हथियारों के साथ हमला कर रहे थे लेकिन यह दोनों घबराएं नहीं । इन्होंने सारी रात डट कर मुकाबला किया ।

उर्युक्त घटना में इन्द्र मिन्हास का बायां हाथ बुरी तरह से घायल हो गया ।

परन्तु यह अपने एक ही हाथ से रात भर आतंकवादियों का मुकाबला करते रहे।

एक आतंकवादी ने संजीत पर राकेट लांचर से हमला करना चाहा, परन्तु इन्होंने उस पर तुरंत हमला कर दिया, जिससे राकेट लांचर वही गिर गया और उसमें हुए विस्फोट से और कई आतंकवादी घायल हो गए और कुछ मारे गए। जब आतंकवादियों ने एक घर को आग लगा दी तो संजीत मिन्हास ने गोलियों की बौझरों की परवाह किए बगैर उस जलते हुए घर में घुस कर, उस घर के सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकाला।

अंत में आतंकवादी भायभीत होकर अपने विस्फोटक व अन्य सामान वहीं छोड़ कर भाग खड़े हुए। यह दोनों अभी तक हिम्मत के साथ अपने गांव सरतिगल में रह रहे हैं। इन दोनों को नागरिक शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

२२. अपना रक्त पीकर व बर्फ खाकर संघर्ष किया

भद्रवाह के मन्थलासलैनी क्षेत्र में ग्राम धुमन्दा के निवासी श्री सूरज प्रकाश ने अपना रक्त पीकर व बर्फ खाकर आतंकवादियों से संघर्ष करते हुए अपने प्राणों की रक्षा की । १६ जनवरी १९९३ को जब सूरज प्रकाश अपने दो साथियों के साथ अपने गांव धुमन्दा से भेड़-बकरियां चराने के लिए धुमदा जा रहे थे तो अचानक लगभग १५ आतंकवादियो ने इन तीनों के ऊपर हमला कर दिया। इन तीनों ने मोर्चा संभाला और पत्थरों के साथ कई घंटे आतंकवादियों का मुकाबला करते रहे।

अंत में सूरज प्रकाश के दो साथी आतंकवादियों के हमले में शहीद हो गए। सीधे-सादे ग्रामवासी सूरज प्रकाश अकेले होकर भी हिम्मत के साथ आतंकवादियों से मुकाबला करते रहे । अंत में यह गंभीर रूप से घायल हो गए। इनका सारा शरीर लहुलुहान हो गया। आतंकवादी तंग आकर चले गए।

लहुलुहान होने के बाद भी सूरज प्रकाश ने हिम्मत रखी। इन्होंने अपने आप को बचाने का प्रयास किया । तीन दिन तक लगातार यह बर्फ खाते रहे और अपने शरीर से निकला हुआ रक्त चाटते रहे। इस प्रकार तीन दिन तक भयंकर ठंड व मौत से संघर्ष करते हुए अपने गांव वापस आ पाए।

आधी रात को लघभग १५ आतंकवादियों ने इनका घर और दुकान के आस पास का क्षेत्र घेर लिया। आतंकवादियों ने इन पर हमला किया। उस रात अंधेरा बहुत था, बिजली भी नहीं थी। जगदीश राज व स्वामीराज ने हिम्मत से काम लिया जगदीश राज एक कुल्हाड़ी लेकर अंधेरे में दरवाजे के पीछे छिप गया। जैसे ही आतंकवादी अंदर आए तो उसने उन पर कुल्हाड़ी का जोरदार वार किया। आतंकवादी एकदम हुए हमले से अपना संतुलन खो बेठे। उधर स्वामीराज ने भी एक आतंकवादीपर दुकान से निकलकर झपट्टा मारा। आपस में हुई मुठभेड़ में वह आतंकवादी नीचे खाई में ज़ा गिरा तथा वहां उसकी मृत्यु हो गई। आतंकवादी यह सब देख कर घबरा उठे। अंत में आतंकवादी गोलियां चलाते हुए भाग खड़े हुए।

२६. युवक के प्राण बचाए

किश्तवाड़ तहसील के नागसैनी क्षेत्र में बागना गांव के सीधे-सादे ५५ वर्षीय ग्रामवासी श्री गंभीर चंद ने आतंकवादियों के चंगुल से एक युवक के प्राण बचाए। दिनांक ७ नवम्बर १९९३ को आतंकवादियों ने एक युवक का अपहरण कर लिया। वे उसे मारने के लिए निर्जन स्थान पर ले गए। आतंकवादियों ने उसकी बहुत मारपीट की, फिर उस युवक को नीचे लेटाकर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने को तैयार हो गए। गंभीर चंद छिपकर यहसब देख रहा था। तभी अचानक वह उन आतंकवादियों पर टूट पड़ा। जो आतंकवादी युवक को मारना चाहता था। गंभीर चंद ने उस पर झपट्टा मार कर उसकी ए, के-४७ छीन ली। हथियार चलाने की जानकारी न होने के कारण उसने उसे घुमा कर वार किया जिससे उस आतंकवादी के सिर में जबरदस्त चोट लगी। गंभीर चंद ने उसके पैर पर अपना पैर रख कर, बुरी तरह से उसके पैरों का कचूमर निकाल दिया। यह देख कर अन्य आतंकवादी घबरा उठे और भाग खड़े हुए। गंभीर चंद उस युवक सहित अपने गांव वागना लौट आए. यह आज भी वहां डटे हुए हैं। इन सभी वीरों को नागरिक शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया हैं।

२७. आतंकवादियों की गोलियों का मुकाबला किया

श्री कृष्ण लाल (पूर्व सैनिक) भद्रवाह के किलाड़ क्षेत्र के ग्राम डेरका के निवासी है। श्री रमेश कुमार किश्तवाड़ ग्राम हडियाल के निवासी है। यह दोनों जम्मू-कश्मीर पुलिस में कार्यरत है। यह दोनों स्वर्गीय स्वामी राज काटल के अंगरक्षक थे। २२ सितम्बर ९३ और ३० मई ९४ को जब सरितिंगल के मार्ग पर लगभग ६० आतंकवादियों ने स्वामीराज काटल पर हमला किया तो इन दोनों ने मिल कर आतंकवादियों का मुकाबला किया।

आतंकवादी आधुनिक हथियार के साथ गोलियों की बौछारें कर रहे थे। इन दोनों ने भी अपनी-अपनी बंदूकों से मोर्चा संभाले रखा। आतंकवादियों ने श्री कृष्ण लाल को एक ब्रस्ट मारा, जिसमें उनका बाया हाथ व पैर बुरी तरह से जखमी हो गए। परन्तु इन्होंने हिम्मत रखी और अपने दूसरे हाथ व पैर के सहारे से ही मुकाबला करते रहे। श्री रमेश ने भी पूरे समय तक आतंकवादियों के विरूद्ध संघर्ष किया। इन्होंने ५ आतंकवादियों को भी घायल किया। यह सब देख कर आतंकवादियों की कमर टूट गई और उन्होंने भाग कर अपनी जान बचाई।

कृष्ण लाल व रमेश ने अपने प्राणों की चिंता न करते हुए बहुत बहादुरी के साथ आतंकवादियों का मुकाबला किया। कृष्ण लाल के हाथ व पैर अभी तक ठीक नहीं हुए है।

२८. गोली का पत्थरों से मुकबला किया

किश्तवाड़ के नागसैनी के क्षेत्र के पुल्लर गांव में चत्तर सिंह नाम के एक सीधे से ग्रामीण अपने परिवार के साथ रहते हैं। इन्होंने बहादुरी दिखा कर आतंकवादियों का मुकाबला किया।

दिनांक २२ मार्च ९४ को १५-१६ आतंकवादियों ने इनके गांव पुल्लर को घेर लिया। आतंकवादी घर-घर जाकर लोगों को लूटने लगे। कई लोगों की इन्होंने मार-पिटाई भी की। चत्तर सिंह से यह सब नहीं देखा गया।

इन्होंने अपने परिवार सहित कुछ लोगों को एकत्र कर आतंकवादियों ने इनके ऊपर गोलियां चलाना शुरु कर दिया। परन्तु चत्तर सिंह ने हिम्मत नहीं हारी आतंकवादियों के ऊपर हामला कर दिया और गोलियों का उत्तर पत्थरों से देते रहे । पत्थर लगने से कई आतंकवादी घायल भी हुए । इन्होंने पत्थर मार-मार कर आतंकवादियों को मार भगाया। चत्तर सिंह ने अपना घर आतंकवादियों से नहीं लुटने दिया। मन की दृढ़ शक्ति के आगे बन्दूके भी ठंडी पड़ जाती हैं । इन सभी राष्ट्रभक्तों को नागरिक शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

२९. हत्या करके गोलियां बरसाते हुए भागने वाले आतंकवादी को अंततः ग्रामीणों ने घेर लिया

आतंकवादियों के दांत खट्टे किए

किश्तवाड़ के दूरदराज कुलवाड़ा क्षेत्र के ग्राम हलुड़ के निवासियों ने साहस का परिचय देकर आतंकवादियों से अपने गांव की जान-माल की रक्षा की। ९ जून, ९४ को रात्रि ८ बजे के लगभग सात आतंकवादियों ने हलुड़ गांव को घेर लिया। इन्होंने गाँव वालों को बाहर निकाल कर एक स्थान पर एकत्र होने को कहा। इस बात का गांव के युवकों ने विरोध किया। इन्होंने कहा कि यह हमें मार कर कहीं १४ आगस्त १९९३ की तरह १६ लोगों की हत्या का कांड दुहरा दें। तीन आतंकवादी उन युवकों के पास आकर अपनी ए. के. ४७ का रौब दिखाने लगे । परन्तु वह युवक डरे नहीं और वह उन तीन आतंकवादियों के ऊपर टूट पड़े। एक आतंकवादी ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं । यह देख गांव के अन्य लोग कुल्हाड़े, डण्डे, चाकू, दरातियां आदि लेकर घरों से बाहर निकल आए। युवकों ने हिम्मत करके दो आतंकवादियों की ए. के. ४७ छीन कर उन्हें मकान की छत से नीचे गिरा दिया। गांव के अन्य लोगों ने उन दो आतंकवादियों को कुल्हाड़ियों व डंडों से मार दिया। आतंकवादियों की गोलियों से दो युवक शहीद हो हए और ५ घायल हो गए। अंत में शेष बचे आतंकवादी घबरा कर भाग खड़े हुए । गांव के सीधे-सादे लोगों ने आतंकवादियों से टकरा कर अपने गांव के सभी लोगों के प्राणों की रक्षा करके आतंकवादियों के दांत खट्टे करके नाकों चने चबवा दिए।

बलिदानों की इस श्रृंखला में देशभक्ति विजयी होगी

आतंकवादियों को मुह तोड़ जवाब देने वाले देशभक्तों की साहस गाथा की ऊपर वर्णित घटनाएं मात्र कुछ उदाहरण हैं । बलिदानों की मुंडमाला में प्रतिदिन कुछ मुंड जुड़ रहे हैं, परंतु दुर्भाग्य की बात है कि प्रशासन और सरकारी नेताओं की ढुलमुल नीति के कारण आतंकवादी कुचले जाने की बजाय बढ़ते जा रहे हैं ।

बलिदानों की श्रृंखला में संघ स्वयंसेवक पंक्ति में आगे खडा है । विभिन्न प्रकार की योजना बनाकर संघ स्वयंसेवक डोडा जिले तथा आसपास के क्षेत्रों के लोगों का मनोबल बढ़ा रहे हैं । बलिदानी वीर संघ की पाठशाला अर्थात शाखा से निकले "वीर पुत्र" हैं । भद्रवाह जिले के संघचालक पंडित ओंकार नाथ जी की दुकान तथा किश्तवाड़ जिला के कार्यवाह श्री चुन्नी लाल परिहार के गाँव का घर रात्रि के अंधकार में आतकंवादियों ने आग में धू -धू करके जला दिया ।

परंतु बलिदानों की परंपरा तभी सार्थक होगी, जब सरकार आतंकवादियों को कुचलने तथा आतंकवाद की मदद करने वाले दुश्मनों को समाप्त करने जैसे कठोर कदम उठायेगी । इसके लिये प्रत्येक गांव तथा शहर के संपूर्ण जम्मू-कश्मीर की देशभक्त जनता को संगठित रूप से तैयार करना होगा । दिल्ली में बैठी केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि आतंकवाद को समाप्त करने के लिए शीघ्र कार्यवाही करें । डोडा जिले की आम जनता सड़क पर उतर आयी हैं । डोडा का बदलता इतिहास हुंकार रहा है-

"याचना नहीं रण होगा, संघर्ष महाभीषण होगा"

आतंकवाद समाप्त होकर रहेगा । केसर की क्यारियाँ महकेगीं । खुशियों के पुष्प खिलेंगें । देशद्रोहियों का विनाश होगा । शान्ति व सुख के गीत गाये जायेंगे ।

डोडा जिला प्रचारक श्री रवीन्द्र जुरान ने कविता के रूप में लिखा है कि अमर बलिदानी आत्मायें हमसे वचन मांग रहीं हैं:-

स्वर्ग के पावन भवन में,
आत्मा तब प्रसन्न होगी,
बलिदानों की इस श्रृंखला में,
जब देशभक्ति विजयी होगी ।

इसलिए है, भरत पुत्रों ।
शस्त्र हाथ में उठा लो,
मातृभूमि की अर्चना में,
बलि असुरों की चढ़ा दो,
जुगरान की चेतावनी सुन लो,

मातृभूमि है यह हमारी,
हम नहीं विश्राम लेंगें,
मर मिटेंगें हम यहीं पर,
पर विस्थापित नहीं होंगें ।

हम विस्थापित नहीं होंगे - हम विस्थापित नहीं होगें ।

<< भारत माता की जय >>

मा. हो. वे. शेषाद्रिजी (सर कार्यवाहक) एवं *मा. जितेन्द्र वीर गुप्ता* (पूर्व मुख्य न्यायधीश हरियाणा पंजाब-उच्चन्यायालय, क्षेत्रीय संघचालक) ने छः वीरो का आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष में विजयी होने पर *अभिनन्दन* किया । उन वीरों के साथ ।

१८ अप्रैल १९९४ — अग्रवाल धर्मशाला प्रागण, जम्मू